



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 294]

नई दिल्ली, शुक्रवार, सितम्बर 11, 2009/भाद्र 20, 1931

No. 294]

NEW DELHI, FRIDAY, SEPTEMBER 11, 2009/BHADRA 20, 1931

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 10 सितम्बर, 2009

अंतिम जांच परिणाम

विषय : इंडोनेशिया के मूल के या वहां से निर्यातित कैथोड रे रंगीन टेलीविजन पिकचर ट्यूबों के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच ।

सं. 14/15/2008-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए ;

प्रक्रिया

2. प्राधिकारी द्वारा इस जांच के बारे में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है ।

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे प्राधिकारी कहा गया है) ने दिनांक 15 सितम्बर, 2008 को जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र में विधिवत अधिसूचित किया गया और जिसके द्वारा इंडोनेशिया (जिसे आगे संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच शुरू की गई ।
- (ii) मै. जे. सी. टी. इलेक्ट्रॉनिक्स लि. द्वारा समर्थित मै. सेमटेल कलर लि. (जिन्हें आगे आवेदक कहा गया है) जिनका उक्त उत्पाद के घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, से प्राप्त एक आवेदन के बाद इंडोनेशिया के मूल के या वहां से निर्यातित पूर्ण या अपूर्ण कैथोड रे कलर टेलीविजन पिकचर ट्यूबों (जिन्हें आगे सी पी टी कहा गया है) के संबंध में पाटनरोधी कार्रवाई शुरू की गई थी । आवेदन में संबद्ध देश से उक्त उत्पाद के पाटन और उसके परिणामस्वरूप वास्तविक क्षति का पर्याप्त साक्ष्य निहित था जिसे कार्रवाई की शुरुआत को न्यायोचित ठहराने के लिए पर्याप्त माना गया था ।

- iii) प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 5 के उपनियम (5) के अनुसार जांच की कार्रवाई शुरू करने से पूर्व आवेदकों द्वारा किए गए पाटन संबंधी आवेदन की प्राप्ति के बारे में भारत में संबद्ध देश के दूतावास को अधिसूचित किया;
- iv) प्राधिकारी ने 15 सितंबर, 2008 की जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां भारत में संबद्ध देश के दूतावास, आवेदकों द्वारा उपलब्ध कराए गए पत्रों के अनुसार संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातक, आयातकों और घरेलू उद्योग को भेजीं और उनसे जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के 40 दिन के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया ।
- v) प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 6 के अनुसार ज्ञात निर्यातक तथा इंडोनेशिया के दूतावास को आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण की प्रतियां उपलब्ध कराईं ।
- vi) नियम 6 के अनुसार भारत में इंडोनेशिया के दूतावास को इस अनुरोध के साथ जांच की शुरुआत के बारे में सूचित किया गया था कि वह निर्धारित अवधि के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए अपने देश के निर्यातक/उत्पादकों को सलाह दें । निर्यातक/उत्पादक को भेजे गए पत्रों और प्रश्नावली की प्रति निर्यातक के नाम और पत्रों के साथ उन्हें भी भेजी गई थी ।

प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 6 के अनुसार ज्ञात निर्यातक तथा इंडोनेशिया के दूतावास को आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण की प्रतियां उपलब्ध कराईं ।

- vii) नियम 6(4) के अनुसार संगत सूचना मांगने के लिए प्राधिकारी ने संबद्ध देश के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातक को प्रश्नावली भेजी;

पीटी एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडोनेशिया
कावासान इंडस्ट्री एमएम 2100 ब्लॉक जी सीबीतुंग
बेकासी बेकासी 11111

- viii) निम्नलिखित निर्यातक/उत्पादक ने निर्यातक प्रश्नावली तथा जांच शुरुआत संबंधी सूचना का उचित ढंग से उत्तर दिया है । निर्यातक ने उत्तर प्रस्तुत करने के लिए समय विस्तार का अनुरोध किया जो उन्हें प्रदान कर दिया गया था ।

पीटी एल पी डिस्प्लेज इंडोनेशिया
कावासान इंडस्ट्री एमएम 2100 ब्लॉक जी सिकारंग वाराह बेकासी 17520

- ix) नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मांगते हुए निम्नलिखित ज्ञात आयातकों और भारत में संबद्ध वस्तु के प्रयोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजीं ।

क) डिक्सन यूटीलीटीज एंड एक्सपोर्ट्स लिमिटेड

बी-14, फेस II, नोएडा - 201305 (उ.प्र.)

ख) एल जी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया प्रा.लि.

प्लॉट नं. 51, उद्योग विहार,

सूरजपुर-कसाना रोड,

ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)

ग) पेनासोनिक एवीसी नेटवर्क्स इंडिया कं. लि.

सी-52, फेस- II,

नोएडा- 201305 (उ.प्र.)

घ) मिर्क इलेक्ट्रोलिक्स लिमिटेड

ऑनिडा हाउस, जी-1, मिडक,

महाकाली गुफा रोड,

अंधेरी (ईस्ट)

मुंबई - 400093

ङ) सेमसंग इंडिया इलेक्ट्रोलिक्स प्रा. लिमिटेड

B-1, सेक्टर-81,

फेस- II,

नोएडा- 201305 (उ.प्र.)

च) वीडियोकॉन इंटरनेशनल लि.

14 किमी. स्टोन,

औरंगाबाद-पैठान रोड, चितेगांव,

तालुक- पेठान,

जिला- औरंगाबाद - 431105

छ) भिर्तिअ इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया लि.

प्लॉट 80, भोसारी इंडस्ट्रियल इस्टेट,

पो.बा.12,

पुणे- 411026

x) उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में मै. सीईएमए तथा एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया लि. ने अपना उत्तर प्रस्तुत करने के लिए समय विस्तार का अनुरोध किया जिसे 30-11-2008 तक देना दिया गया था । आयातकों में से मिर्क इलेक्ट्रॉनिक्स लि. तथा पेनासोनिक एबीसी नेटवर्क इंडिया कं. लि. ने अपने उत्तर दायर किए हैं । तथापि, एल जी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया लि. को कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ था ।

xi) एकत्रित तीन वर्षों और जांच अवधि के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्योरो की व्यवस्था करने हेतु वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से अनुमति किया गया था ;

xii) अधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया और उसे हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षण हेतु खुला रखा;

xiii) समान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर आवेदक द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन की इष्टतम लागत तथा उसे बनाने और बेचने की लागत निकाली गई थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा । इस प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग को किसी प्रेक्टिस कर रहे लागत लेखाकार द्वारा विधिवत अधिप्रमाणित अपनी उत्पादन लागत उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया था ।

ix) यह चिन्ह इस अधिसूचना में आवेदक द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है;

xv) वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ जांच अवधि 1 जुलाई, 2007 से 30 जून, 2008 तक (12 माह) की है । क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच में 1 अप्रैल, 2005 से जांच अवधि की समाप्ति तक की अवधि शामिल है ।

xvi) प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के घरेलू उद्योग/निर्यातकों/आयातकों/औद्योगिक प्रयोक्ताओं द्वारा बाद में लिखित अनुरोधों द्वारा समर्थित विचार प्रस्तुत करने तथा जांच से संगत समझी गई सूचना दायर करने के लिए दिनांक 17.03.2009 को आयोजित सार्वजनिक सुनवाई के रूप में उन्हें अवसर प्रदान किया।

xvii) प्राधिकारी ने इस स्तर पर आवश्यक समझी गई सीमा तक हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रदत्त सूचना की सत्यता के बारे में स्वयं को संतुष्ट किया।

विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु

3. विचाराधीन उत्पाद "पूर्ण अथवा अपूर्ण कैथोड रे रंगीन पिकचर ट्यूबें हैं जिनका विस्तृत उल्लेख "निर्वात अथवा वाष्प अथवा गैस से भरे वॉल्व एवं ट्यूबों, मरक्युरी आर्क रेक्टिफाइंग वॉल्व एवं ट्यूबों जिन्हें कैथोड रे ट्यूब भी कहा जाता है, टेलिविजन कैमरा ट्यूबों अथवा कैथोड रे रंगीन टेलिविजन पिकचर ट्यूब या रंगीन पिकचर ट्यूब इत्यादि के रूप में किया जाता है" और इस अधिसूचना में उन्हें रंगीन पिकचर ट्यूबें अथवा "सीपीटी" एवं "सीआरटी" कहा गया है। विडियो एवं कम्प्यूटर मॉनीटर कैथोड रे ट्यूबें वर्तमान याचिका के दायरे से बाहर हैं।

4. संबद्ध उत्पाद सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 के अध्याय 85 के अंतर्गत उपशीर्ष सं. 8540.11 के तहत आता है। यह सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और किसी भी प्रकार से वर्तमान जांच के कार्यक्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।

घरेलू उद्योग के विचार

5. आवेदकों ने यह दावा किया है कि उनके द्वारा उत्पादित वस्तु इंडोनेशिया के मूल की या वहां से निर्यातित वस्तु के समान वस्तु है। आयातित उत्पाद का उपयोग भी उपभोक्ताओं की समान श्रेणी द्वारा किया जाता है। इस उत्पाद में वही मूलभूत तकनीकी गुणधर्म हैं और इसके कार्य तथा उपयोग एक समान हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

6. विचाराधीन उत्पाद के संबंध में घरेलू उद्योग के अनुरोधों के प्रतिकूल कोई मुद्दा नहीं उठाया गया है। उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद के बारे में प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं।

घरेलू उद्योग के विचार

घरेलू उद्योग के विचार

7. नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है :-

(ख) "घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से हैं जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परंतु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटेंट वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग का भाग नहीं माना जाएगा ।

8. यह आवेदन सैमटेल कलर लिमिटेड द्वारा दायर किया गया है । याचिकाकर्ता ने वर्तमान जांच से संगत सूचना उपलब्ध कराई है । संबद्ध वस्तु का उत्पादन जेसीटी, हॉटलाइन तथा बीपीएल डिस्प्ले डिवाइसेस लि. द्वारा भी किया जाता है । मै. हॉट लाइन तथा बीपीएल ने जांच अवधि की अंतिम तिमाही के दौरान अपना उत्पादन बंद कर दिया था ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

9. विस्तृत प्रारंभिक जांच के बाद प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि (क) सैमटेल कलर लिमिटेड का उत्पादन भारतीय उत्पादन का एक प्रमुख हिस्सा है (ख) याचिकाकर्ता का उत्पादन भारतीय उत्पादन के 50% से अधिक बनता है (ग) आवेदन का 50% से अधिक भारतीय उत्पादन द्वारा समर्थन किया गया है (घ) यह आवेदन घरेलू उद्योग द्वारा या उसकी ओर से किया गया था । इसके अलावा वर्तमान जांच परिणाम के प्रयोजनार्थ सैमटेल कलर लिमिटेड नियम 2(घ) के साथ पठित नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग है ।

निर्यातक, आयातक, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार

10. हॉट लाइन्स तथा बी पी एल को घरेलू उद्योग के दायरे के भीतर शामिल किया जाना चाहिए था क्योंकि उन्होंने जांच अवधि की अंतिम तिमाही में ही उत्पादन बंद किया था परंतु जांच अवधि के दौरान उनकी प्रमुख उपस्थिति बनी रही है । तीसरे उत्पादक जे सी टी इलेक्ट्रॉनिक्स को चीन, कोरिया, थाइलैंड, मलेशिया से आरोपित पाटन हेतु उसी उत्पाद के लिए एक अन्य जांच करते समय उसी प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग का भाग माना गया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

11. मै. हॉट लाइन एवं बी पी एल ने क्षति संबंधी सूचना उपलब्ध नहीं कराई है। अतः प्राधिकारी उनके आंकड़े शामिल करने में असमर्थ है। इसके अलावा, रिकॉर्ड में ऐसी कोई सूचना नहीं है कि हॉट लाइन एवं बी पी एल को क्षति नहीं हुई है। जहां तक जे सी टी का संबंध है, प्राधिकारी ने पूर्ववर्ती मामले में यह नोट किया कि जे सी टी को कहीं अधिक क्षति हुई है। वर्तमान जांच में जे सी टी द्वारा प्रदत्त सूचना से यह भी पता चलता है कि जे सी टी को क्षति हुई है। तथापि, चूंकि सूचना अपेक्षित प्रपत्र में और निर्धारित ढंग में अधूरी है, इसलिए प्राधिकारी ने जे सी टी को घरेलू उद्योग के दायरे में नहीं रखा है। आधार के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोधों के प्रतिकूल कोई मुद्दा नहीं उठाया गया है। उपर्युक्त के मद्देनजर निर्दिष्ट प्राधिकारी घरेलू उद्योग के आधार एवं क्षेत्र के मुद्दे के बारे में प्रारंभिक जांच परिणाम की पुष्टि करते हैं।

जांच की शुरुआत घरेलू उद्योग के विचार

12. घरेलू उद्योग ने जांच के इस पहलू पर कोई अनुरोध नहीं किया है।

निर्यातक, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार। एल पी डी इंडोनेशिया, ऑनिडा और मिर्क इलेक्ट्रोनिक्स

13. यह अनुरोध किया गया है कि जांच की शुरुआत में नियम 5-उप नियम 3(ख) का उल्लंघन किया गया है। अनंतिम जांच परिणामों के पैरा 3 का हवाला देते हुए यह दावा किया गया है कि घरेलू उद्योग के आवेदन में उपलब्ध सूचना तथा अनंतिम जांच परिणामों से यह प्रतीत होता है कि जांच की शुरुआत ही सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं वसूली तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 के उपबंधों का उल्लंघन करते हुए की गई थी। यह भी दलील दी गई है कि जब 1 जुलाई, 2007 से 30 जून, 2008 तक की जांच अवधि घरेलू उद्योग का वित्त वर्ष है तो वर्ष 2007-08 के संबंध में विश्लेषण पर अलग से क्यों विचार किया गया है।

14. प्राधिकारी द्वारा यथा अधिसूचित जांच अवधि 1 जुलाई, 2007 से 30 जून, 2008 तक की है जो घरेलू उद्योग का वित्त वर्ष भी है। अनंतिम जांच परिणामों में क्षति विश्लेषण हेतु विचारित जांच अवधि से तत्काल पूर्ववर्ती वित्त वर्ष 2007-08 है। जब जांच अवधि ही वित्त वर्ष 2007-08 है तो किस आधार पर निर्दिष्ट प्राधिकारी ने क्षति विश्लेषण के लिए इसे पृथक् वर्ष माना है? वर्ष 2007-08 और जांच अवधि के अंतर्गत प्रपत्र IV क में प्रदत्त आंकड़े अलग-अलग हैं जबकि दोनों अवधियां एक ही हैं। क्या आप उस अवधि को स्पष्ट करने की कृपा करेंगे जिस अवधि के लिए वर्ष 2007-08 के आंकड़ों पर विचार किया गया है? क्षति विश्लेषण में 2007-08 के लिए कॉलम में विचारित आंकड़ों से वित्त वर्ष 2007-08 के आंकड़ों का पता नहीं चलता है और इस प्रकार समूची जांच त्रुटिपूर्ण/धोखाधड़ीपूर्ण आंकड़ों पर

आधारित है। जांच की शुरुआत ही सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं वसूली तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 के उपबंधों का उल्लंघन करते हुए की गई थी क्योंकि साक्ष्य में कोई सत्यता नहीं थी। इसी प्रकार, अनंतिम जांच परिणाम में दर्ज क्षति विश्लेषण इसी प्रकार के त्रुटिपूर्ण विचार पर आधारित है। अतः अनुरोध है कि इस जांच को तुरंत समाप्त किया जाए और पूर्णतः तथा विधिवत प्रलेखित याचिका के आधार पर यदि जरूरी हो, नई जांच शुरू की जाए।

जांच अवधि और क्षति अवधि

एल पी डी इंडोनशिया, ऑनिडा एवं मिर्क इलेक्ट्रॉनिक्स के अनुरोध

15. डीजीएडी की पिछली परंपरा के अनुसार, पाटनरोधी जांच की शुरुआत हेतु किसी आवेदन में घरेलू उद्योग के कार्य की स्थिति और जांच अवधि तथा पिछले तीन वर्षों के लिए आयातों के बारे में सूचना निहित होनी चाहिए। इसे क्षति अवधि का नाम दिया गया है। वर्तमान जांच में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने जांच अवधि को जुलाई, 2007 से जून, 2008 तक माना है और क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच की अवधि 1 अप्रैल, 2005 से जांच अवधि की समाप्ति तक ली गई है। इसका तात्पर्य यह है कि क्षति अवधि जांच अवधि जमा दो पूर्ववर्ती वर्ष की मानी गई है। इन परिस्थितियों में घरेलू उद्योग को वर्ष 2004-05, 2005-06, 2006-07 और जांच अवधि के लिए सूचना दायर करनी चाहिए थी। रोचक तथ्य यह है कि जांच अवधि वर्ष 2007-08 ही है और इस प्रकार 2007-08 को अलग अवधि नहीं माना जा सकता। यद्यपि, वर्ष 2004-05 के आंकड़े ऊपर उल्लिखित एक समान उत्पाद की चल रही एक अन्य जांच में प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किए जा चुके हैं। तथापि, वर्तमान जांच में इस प्रकार की सूचना को शामिल नहीं करने का कोई कारण नहीं बनता है। डीजीएडी द्वारा अपने पूर्व निर्धारित व्यवहार से अलग हटने का कारण समझ से परे है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

16. प्राधिकारी ने उपर्युक्त मुद्दों की जांच की है। यह देखा गया है कि जांच अवधि में 1 जुलाई, 2007 से 30 जून, 2008 तक की है। जबकि वर्ष 2007-08 के आंकड़े 1 अप्रैल, 2007 से 31 मार्च, 2008 की अवधि के लिए हैं। जांच अवधि वित्त वर्ष नहीं है। जांच अवधि और वित्त वर्ष अलग-अलग होने के कारण वर्तमान विश्लेषण प्राधिकारी द्वारा इस मुद्दे पर जारी व्यापार सूचना के अनुरूप है। जहां तक इस तर्क का संबंध है कि जांच अवधि और पूर्ववर्ती वर्ष के बीच अधिव्याप्ति हुई है, प्राधिकारी पूर्व में जारी अपनी व्यापार सूचना का हवाला देते हैं जिसमें इस बात का स्पष्ट प्रावधान है कि क्षति अवधि में कोई अंतर नहीं होना चाहिए। इसके अलावा, जब क्षति जांच अपेक्षाकृत अधिक लंबी अवधि के लिए की गई है और क्षति संबंधी निष्कर्ष जांच अवधि और पूर्ववर्ती वर्ष की अवधि के बीच कड़ी तुलना पर आधारित नहीं है, तो मुद्दा यह बनता है कि क्षति संबंधी निष्कर्ष को किस प्रकार विकृत किया गया है क्योंकि जांच अवधि और पूर्ववर्ती वर्ष में अधिव्याप्ति के कारण को हितबद्ध पार्टियों द्वारा जानकारी में नहीं लाया गया है। अतः प्राधिकारी इस संबंध में प्रारंभिक निर्धारण को बरकरार रखते हैं और

यह मानते हैं कि जहां तक जांच अवधि के चयन और क्षति अवधि के विश्लेषण का संबंध है, इसमें कोई अस्पष्टता तथा असंगतता नहीं है ।

गोपनीयता

निर्यातक, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार

एल पी डी इंडोनशिया, ऑनिडा और मिर्क इलेक्ट्रॉनिक्स

17. यह दलील दी गई है कि प्राधिकारी ने गोपनीयता का उस समय दावा किया है जब संबंधित पार्टी ने आंकड़ों के बारे में अगोपनीयता का दावा किया था । इस संबंध में उन्होंने "****" के बेशी उपयोग का दावा करते हुए विभिन्न क्षति संबंधी आंकड़ों के विश्लेषण के अंतर्गत अनंतिम जांच परिणामों का उल्लेख किया है जिससे यह पता चलता है कि आंकड़ा प्रदाता ने उन्हें गोपनीय आधार पर प्रदान किया है । तथापि, घरेलू उद्योग के अगोपनीय अनुरोध के साथ उनका हवाला देते समय यह पाया गया है कि उन्होंने उन्हें गोपनीय होने का दावा नहीं किया है । इस संदर्भ में उन्होंने प्रारंभिक जांच परिणामों के पैरा 30 का भी हवाला दिया है जहां प्राधिकारी ने उत्पादन, क्षमता, बिक्री मात्रा और क्षमता उपयोग की कुछ सूचना को नोट किया है । समग्र आंकड़ों को *** दर्शाया गया है । जिसका तात्पर्य यह है कि ये गोपनीय आंकड़े हैं । तालिका में भी सूचीबद्ध सूचना शामिल की गई है । क्षति संबंधी सूचना से संबंधित प्रपत्र IV क में आवेदक घरेलू उद्योग ने समग्र आंकड़ों को अगोपनीय रूप में प्रस्तुत किया है । ऐसी किसी स्थिति में जब घरेलू उद्योग ने आंकड़ों को अगोपनीय होने का दावा किया है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा किस प्रकार इन आंकड़ों को गोपनीय माना गया है, हमें स्वीकार्य नहीं है । यह आंकड़ों में किसी त्रुटि को छिपाने के प्रयास के अलावा कुछ नहीं है जिसे निर्दिष्ट प्राधिकारी ने माना है परंतु वह इसे प्रकट करना नहीं चाहते हैं ।

18. घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त और निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा विचारित आंकड़े नितांत प्रतिकूल हैं । यह दलील दी गई है कि पेपर बुक में सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता द्वारा प्रकटित कुछेक अनुपात अत्यधिक विस्तृत और निर्यातक एवं आयातक द्वारा विस्तृत एन सी वी अनुपात के प्रकटन के उत्तर में दिए गए हैं । घरेलू उद्योग के लिए भी यह अपेक्षित है कि वह इसी प्रकार का प्रकटन उपलब्ध कराएं । एल पी डी - 1 ने भी पूर्ववर्ती जांच का हवाला दिया है जिसमें उसने भारत के साथ तुलना करते समय याचिकाकर्ताओं तथा अन्य क्षेत्राधिकारों के प्राधिकारियों के लिए अपेक्षित सार्वजनिक प्रकटन मानकों में अंतर प्रदर्शित करने के लिए वर्ष 2006 में ई यू जांचों में तथा ई सी के जांच परिणामों में सामुदायिक उद्योग की सार्वजनिक याचिका दायर की थी । आशा की जाती है कि माननीय प्राधिकारी याचिकाकर्ताओं द्वारा एन सी वी प्रकटन की अपनी जरूरत के बारे में भविष्य में अधिक कठोर और समान व्यवहार की प्रवृत्ति का अनुपालन करेंगे और प्रकटन के बारे में अपने मानकों में सुधार करेंगे ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

19. प्राधिकारी ने सूचना की गोपनीयता के बारे में हितबद्ध पार्टियों के तर्कों पर विचार किया है और जहां कहीं सूचना के गोपनीय होने का दावा किया गया है वहां संभव सीमा तक सूचीबद्ध सूचना उपलब्ध कराई है। प्रकटन विवरण जारी करते समय आयात की मात्रा और बाजार हिस्से के संबंध में सूचना का प्रकटन किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह अनुरोध है कि घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त तथा प्राधिकारी द्वारा विचारित आंकड़ों के समर्थन में ऐसे कोई विशिष्ट नग नहीं दिए गए हैं जिनका हवाला ऐसा अनुरोध करते समय दिया गया हो। एक एकमात्र पहलू यह है कि यह एक कथन मात्र है जिसका समर्थन रिकॉर्ड में उपलब्ध किसी साक्ष्य से नहीं किया गया है। जहां तक क्षमता, क्षमता उपयोग आदि का संबंध है, प्राधिकारी की यह पद्धति रही है कि जब आंकड़े एक ही कंपनी पर आधारित हों तो उन्हें सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराया जाए। यदि कोई आंकड़ा घरेलू उद्योग ने अपने गोपनीय रूपांतरण में निर्यातकों को उपलब्ध कराया जा चुका है तो प्रतिवादी निर्यातक के पास इस संबंध में कोई मुद्दा उठाने का कोई कारण नहीं होता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रतिवादी निर्यातक के लिए यह विवेकपूर्ण होगा कि वह उनके द्वारा किए गए अनुसार अगोपनीय रूपांतरण में घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों की तुलना में प्रारंभिक जांच परिणाम के दस्तावेज में प्रदत्त सूचीबद्ध आंकड़ों में किसी असंगति का उल्लेख करें। इस बारे में कोई किसी असंगतिक उल्लेख नहीं किया गया है और प्रकटन विवरण पर दी गई टिप्पणियों में रिकॉर्ड में ऐसी कोई बात उपलब्ध नहीं है। प्राधिकारी ने सुसंगत पद्धति का अनुसरण किया है जिसे उसने अन्य सभी मामलों में समान रूप से अपनाया है।

सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन

पीटी एलपी डिस्प्लेज इंडोनेशिया के लिए सामान्य मूल्य:

20. इंडोनेशिया के निर्यातक मै. पीटी एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स ने निर्यातक प्रश्नावली की अपेक्षाओं के अनुसार उत्तर दिया। निर्यातक को इन अनुरोधों पर कुछ प्रश्नों के बारे में सूचित किया गया था। सामान्य मूल्य निकालने के लिए कंपनी के तदनुरूपी आकार की घरेलू बिक्री की व्यापार की सामान्य प्रक्रिया के दौरान की गई बिक्री से संबंधित जांच (ओसीटी) उत्पादन की संबंधित लागत की तुलना करने के बाद की गई थी। डी वाई लागत तथा वित्तीय व्यय के संबंध में आबंटनों हेतु संबंधित उत्पादन लागत को समायोजित किया गया है। उपर्युक्त आधार पर प्रत्येक आकार के लिए आबंटन निकाले गए हैं जिन्हें ओसीटी जांच करने के लिए अपनाया गया है। इस आधार पर निर्यातित आकारों के संबंध में सामान्य मूल्य निकाला गया है। भारत को निर्यातित 3 आकारों में से 14 तथा 20 आकार के संबंध में सामान्य लागत+उचित लाभ पर आधारित किया गया है और 21 आकार के विभिन्न रूपांतरणों को घरेलू बाजार में कुल बिक्री पर आधारित किया गया है। निर्यातकों के प्रतिनिधियों ने जांच की थी और अपेक्षित ब्यौरे उपलब्ध कराए गए थे। इस संबंध में निर्यातकों ने आगे कोई टिप्पणी नहीं दी है।

21. चूंकि सामान्य मूल्य देश विशिष्ट होता है, इसलिए मै. पीटी एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडोनेशिया (सहयोगी निर्यातक) के संबंध में निकाले गए सामान्य मूल्य को अवशिष्ट श्रेणी के लिए भी अपनाया गया है ।

निर्यात कीमत:

22. प्रतिवादी निर्यातक के रिकॉर्डों का सत्यापन 7 और 8 अप्रैल, 2009 को उनके परिसरों में किया गया था । निर्यात सौदों की जांच निर्यातक के रिकॉर्ड के साथ की गई थी । भारत को किए गए सौदों के लिए बिक्री की शर्तें भारतीय आयातकों द्वारा वहन किए गए एफओबी पश्चात व्यय के साथ सी एन एफ तथा एफ ओ बी दोनों आधारों पर पाई गई थीं । अंतरदेशीय भाड़े, हैंडलिंग प्रभार, विदेशीय भाड़े (केवल सी एन एफ सौदों के बारे में), ऋण लागत एवं बैंक प्रभारों के लिए दावा किए गए समायोजनों के लिए सत्यापन संबंधित रिकॉर्डों से किया गया था और उन्हें दावानुसा सुव्यवस्थित पाया गया था । पैकिंग प्रभारों और अंतरदेशीय बीमा के लिए किसी समायोजन का दावा नहीं किया गया था । चूंकि इस प्रकार के समायोजन घरेलू बिक्री पर लागू होते हैं और घरेलू बिक्री के लिए इन व्ययों के लिए किसी समायोजन का दावा नहीं किया गया है इसलिए इस हेतु समायोजनों की अनुमति निर्यात कीमत की तुलना में भी प्रदान नहीं की गई है ।

23. सहयोगी निर्यातक को दी गई अनुमति के अनुरूप समायोजनों की अनुमति देने के बाद अवशिष्ट श्रेणी के संबंध में निवल निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु सहयोगी निर्यातक के बारे में न्यूनतम निर्यात कीमत पर विचार किया गया है । न्यूनतम निर्यात कीमत का निर्धारण प्रत्येक रूपांतरण हेतु उचित वाणिज्यिक मात्रा के आधार पर किया गया है ।

पाटन मार्जिन

25. प्राधिकारी ने प्रत्येक आकार के लिए अलग-अलग सामान्य मूल्य तथा कारखाना स्तर पर निर्यात कीमत, दोनों का निर्धारण किया है । संबद्ध मात्रा पर विचार करते हुए संचयी पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है । इस प्रकार प्राधिकारी यह मानते हैं कि की गई तुलना उचित तुलना है । उपर्युक्तानुसार निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर विचार करते हुए पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है जो निम्नानुसार बनता है:-

पीटी एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडोनेशिया							
कंपनी कोड	***	***	***	***	***	***	योग
आकार	***	***	***	***	***	***	
मात्रा (नग)	***	***	***	***	***	***	

सामान्य मूल्य (अम.डॉ.)	***	***	***	***	***	***	
निवल निर्यात कीमत (अम.डॉ.)	***	***	***	***	***	***	
पाटन मार्जिन (अम.डॉ.)	***	***	***	***	***	***	
पाटन मार्जिन%	35-40	20-25	3-8	2-7	नकारात्मक	3-8	2-7
अन्य शुल्क	36.00	23.35	10.53	33.53	0.45	8	27-32

क्षति निर्धारण और कारणात्मक संबंध के निर्धारण हेतु कार्य प्रणाली

घरेलू उद्योग के विचार

27. घरेलू उद्योग के विचार निम्नानुसार हैं:-

- (क) विदेशी उत्पादकों ने क्षति अवधि के दौरान अपनी कीमतों में लगातार कमी जारी रखी ;
- (ख) इंडोनेशियाई उत्पादक पूर्ववर्ती जांच अवधि के समय प्रचलित कीमतों से कम कीमतों पर पैकज कर अन्य विदेशी उत्पादकों में शामिल हो गया
- (ग) समूची क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को लगातार अपनी कीमतें कम करने के लिए बाध्य किया गया है;
- (घ) यद्यपि इंडोनेशिया से आयात हाल ही में शुरू हुए हैं तथापि, प्रस्तावित जांच अवधि के दौरान इनकी मात्रा काफी अधिक थी ;
- (ङ) आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में अत्यधिक कमी आ रही है ;
- (च) अत्यधिक कीमत हास के कारण अंशदान मार्जिन में तेजी से गिरावट आई ;
- (छ) अंग्रेजद्वारा और उसके परिणामस्वरूप अंशदान में आई गिरावट के कारण लाभ, निवेश पर आय तथा नकद प्रवाह के संबंध में घरेलू उद्योग की स्थिति अत्यंत खराब हो गई । घरेलू उद्योग को भारी वित्तीय घाटा हुआ और निवेश पर आय ऋणात्मक रही;
- (ज) पाटन का इतना गंभीर प्रभाव पड़ा है कि कंपनी की समग्र वित्तीय स्थिति अत्यधिक खराब हो गई;
- (झ) आयातों में समग्र रूप में और भारत में उत्पादन एवं खपत के संबंध में भी वृद्धि हुई है;

- (ट) यद्यपि घरेलू उद्योग के उत्पादन में वर्ष 2006-07 तक वृद्धि हुई, तथापि प्रस्तावित जांच अवधि में उसमें गिरावट आई ;
- (ठ) यद्यपि घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में वृद्धि हुई है, तथापि, यह वृद्धि मांग में हुई वृद्धि से काफी कम रही है जबकि घरेलू उद्योग के पास अनप्रयुक्त क्षमताएं पड़ी हुई हैं;
- (ड) घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में गिरावट आई है;
- (ढ) घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा वर्ष 2006-07 तक बढ़ा है और तत्पश्चात उसमें उक्त अवधि में हुए आयातों में पर्याप्त वृद्धि के कारण तेजी से गिरावट आई है ।

28. इस प्रकार यह तर्क दिया गया है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है और संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को अत्यधिक वास्तविक क्षति हो रही है । वर्तमान अवधि के दौरान निष्पादन में आई गिरावट काफी अधिक और वास्तविक है ।

29. विभिन्न क्षति मापदंडों पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है और संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों द्वारा घरेलू उद्योग को अत्यधिक वास्तविक क्षति हो रही है । वर्तमान अवधि के दौरान निष्पादन में आई गिरावट काफी अधिक और वास्तविक है । आयातों में वृद्धि के बारे में यह बताया गया है कि आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है । इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप यह दावा किया गया है कि घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा मांग में वृद्धि के परिणामस्वरूप नहीं बढ़ सका । इसके विपरीत यह दावा किया गया है कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में जांच अवधि के दौरान अत्यधिक गिरावट आई है । इसके अलावा प्रस्तावित जांच अवधि में बाजार हिस्से में पर्याप्त गिरावट के बारे में यह दावा किया गया है कि इससे उत्पादन क्षमताओं का काफी कम प्रयोग हुआ है । यह दावा किया गया है कि आयात कीमत में गिरावट की वजह से घरेलू उद्योग अपनी कीमतें कम करने के लिए बाध्य हुआ जिससे लाभ मार्जिन में भारी कमी आई तथा लाभ/हानि, निवेश पर आय और नकद प्रवाह की स्थिति खराब हुई ।

अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार

एल पी डी इंडोनेशिया तथा मिर्क इलेक्ट्रोनिक्स

30. घरेलू उद्योग के रूप में सेमटेल कलर लिमिटेड द्वारा दिए गए एक आवेदन के बाद वर्तमान पाटनरोधी जांच 15 सितंबर, 2008 को शुरू की गई है । प्रारंभिक जांच परिणामों के पैरा 9 में यह उल्लेख किया गया है कि भारत में संबद्ध वस्तु के 3 और उत्पादक हैं । जे सी टी इलेक्ट्रोनिक्स संबद्ध वस्तु का उत्पादन कर रहा है । प्रारंभिक जांच परिणामों में किए गए उल्लेख के अनुसार हॉट लाइन्स तथा बी पी एल ने जांच अवधि की अंतिम तिमाही में उत्पादन बंद कर दिया है । चूंकि ये दोनों उत्पादक जांच अवधि के अधिकांश भाग में उत्पादन कर रहे थे, इसलिए इन्हें घरेलू उद्योग से अलग रखने का कोई औचित्य नहीं है । प्राधिकारी द्वारा

अंतिम तिमाही को छोड़कर ऐसी जांच अवधि ली जा सकती है ताकि निष्पक्ष जांच के प्रयोजनार्थ समग्र घरेलू उद्योग का उचित विश्लेषण किया जा सके ।

31. प्राधिकारी द्वारा चीन, कोरिया, थाइलैंड तथा मलेशिया से आरोपित पाटन के लिए इसी उत्पाद हेतु एक अन्य जांच भी की जा रही है । उक्त जांच के लिए एक अन्य घरेलू उत्पादक जे सी टी इलेक्ट्रॉनिक्स घरेलू उद्योग का भाग था । यद्यपि, प्राधिकारी के पास उक्त उत्पादों के क्षति संबंधी आंकड़े उपलब्ध थे, तथापि प्राधिकारी के समक्ष ऐसी कौन सी बाधा उपलब्ध हुई जिसके तहत उन्होंने घरेलू उद्योग से उक्त उत्पादक को अलग रखा, समझ से परे है । स्वतंत्र और निष्पक्ष जांचकर्ता प्राधिकारी के लिए इस प्रकार का भेदभावपूर्ण व्यवहार कानूनन दोषपूर्ण है और इसमें सुधार किए जाने की जरूरत है । निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निष्पक्ष जांच हेतु संगत आंकड़ों के साथ उसे मदद प्रदान करने के लिए समस्त घरेलू उत्पादकों को निर्देश दिए जाने की जरूरत है । जांच में विचारित आंकड़े घरेलू उद्योग के अत्यंत अल्प खंड के लिए हैं और वे घरेलू उद्योग की सूचना हेतु विचार करने के लिए अपर्याप्त हैं ।

32. यह नितांत स्वाभाविक है कि याचिकाकर्ता उन्हें हुई क्षति के कारण के रूप में आयातों को दोष देंगे । अपने दावे की पुष्टि करने के लिए उन्होंने गोपनीय आधार पर प्रस्तुत आंकड़ों का दावा कर उन्हें बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया है जो अन्य हितबद्ध पार्टियों की पहुंच से बाहर हैं । वे लागत, बिक्री या लाभप्रदता का कोई सूचीबद्ध आंकड़ा उपलब्ध कराने में भी काफी परंपरावादी रहे हैं । इसके अभाव में अन्य हितबद्ध पार्टियां कोई सार्थक विचार प्रस्तुत करने में अक्षम रही हैं । निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पैरा 19 में यह दर्ज किया है कि घरेलू उद्योग से भिन्न किसी हितबद्ध पार्टी ने कोई विचार प्रस्तुत नहीं किया है । निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह समझना चाहिए कि याचिकाकर्ताओं ने अगोपनीय आवेदन में पर्याप्त एवं सही आंकड़ा प्रस्तुत नहीं किया है ताकि अन्य हितबद्ध पार्टियां उस पर टिप्पणी दे सकें । यह नोट करना रोचक है कि जिन आंकड़ों के बारे में याचिकाकर्ता ने गोपनीयता का दावा नहीं किया है उन्हें निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पूर्ववर्ती पैराग्राफ में किए गए उल्लेख कि अनुसार प्रारंभिक जांच परिणामों में गोपनीय माना है । याचिकाकर्ताओं ने अगोपनीय आवेदन में अपनी क्षमता, उत्पादन, घरेलू बिक्री, निर्यात बिक्री आदि के बारे में कुछेक सूचना प्रदान की है । यद्यपि उनमें से कुछ सूचना प्राधिकारी को भ्रमित करने के लिए गलत और दुराशयपूर्ण है, वे ऐसे असत्य एवं अपर्याप्त आंकड़े उपलब्ध करवाकर अनंतिम शुल्क लगावाने में भी कामयाब रहे हैं जिन पर प्राधिकारी ने अपने विवेक का इस्तेमाल किए बिना भरोसा किया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

33. पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.1 और पाटनरोधी नियम के अनुबंध II में यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव और ; (ख) पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातकों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच शामिल होगी । प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या आयातों में समग्र रूप में अथवा आयातक सदस्य में उत्पादक या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है । जहां तक पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी

के लिए यह जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या पाटित आयातों द्वारा आयातक देश में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में कीमत में पर्याप्त कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में अन्यथा पर्याप्त स्तर तक गिरावट आई है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती ।

34. क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के प्रभाव तथा उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री, कीमत और लाभप्रदता के प्रभाव की संचयी जांच की है ताकि क्षति एवं पाटन तथा क्षति के बीच कारणात्मक संबंध, यदि कोई हो, की मौजूदगी की जांच की जा सके । जहां तक रिकॉर्ड में पहले से उपलब्ध जे सी टी के आंकड़ों के विश्लेषण का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि रिकॉर्ड में उपलब्ध आंकड़े वर्तमान जांच की जांच अवधि के अनुरूप नहीं हैं और इन अछूरे आंकड़ों पर भरोसा करने से विकृति उत्पन्न हो सकती है । किसी पाटनरोधी जांच में भागीदारी करना या न करना उत्पादक/विनिर्माता के विकल्प पर निर्भर करता है । मै. जे सी टी ने केवल याचिका का समर्थन किया है और जांच में भागीदार बनने की मांग नहीं की है । क्षति विश्लेषण केवल मै. सेमटेल के आंकड़ों पर आधारित हैं वर्तमान मामले में घरेलू उद्योग पाटनरोधी नियमावली के क्षेत्र में आता है । जहां तक इस आरोप का संबंध है, कि याचिकाकर्ताओं ने पर्याप्त और सही आंकड़े उपलब्ध नहीं करवाए हैं, पुनः भाव कथन है जिसके समर्थन में कोई तथ्यात्मक साक्ष्य नहीं दिया गया है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने केवल सत्यापित आंकड़ों को रिकॉर्ड में लिया है । जहां तक क्षमता, क्षमता उपयोग का संबंध है, इन्हें उपर्युक्त पैरा 19 में स्पष्ट किया जा चुका है ।

35. चूंकि संबद्ध देश से निर्यातों के लिए सकारात्मक पाटन मार्जिन की पुष्टि हुई है इसलिए क्षति विश्लेषण तथा कारणात्मक संबंध की जांच के प्रयोजनार्थ संबद्ध देश के समस्त निर्यातों को पाटित आयात माना गया है ।

मात्रात्मक प्रभाव:

एल पी डी इंडोनेशिया, ओनिडा तथा मिर्क इलेक्ट्रॉनिक्स के विचार

36. यह दलील दी गई है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी का निर्धारण आकस्मिक नीति पर आधारित है । उनके अनुसार प्राधिकारी ने 30 दिसंबर, 2008 को प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए हैं। वह डीजीसीआईएंडएस जो आयात आंकड़ों का विश्वसनीय सरकारी स्रोत है, से 30 जून, 2008 को समाप्त तिमाही के लिए सही आयात के आंकड़े एकत्र करने में विफल रहा था । यदि इंडोनेशिया से हुए कुल आयातों के बारे में प्रतिवादी निर्यातक की निर्यात मात्रा का पता चलता है तो उक्त देश के निर्यातकों की किसी अवशिष्ट श्रेणी पर विचार करने का कोई कारण नहीं हो सकता और तदनुसार शुल्क तालिका को संशोधित किया जाना चाहिए था । यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी यह महसूस करते हैं कि इंडोनेशिया के अन्य निर्यातक भी थे और अवशिष्ट शुल्क अधिसूचित किया जाना अपेक्षित था तो प्रतिवादी निर्यातक के निर्यात आंकड़ों पर उक्त देश से हुए कुल आयातों के रूप में विचार नहीं किया जाना चाहिए था । हडबडी में

अधिसूचित किए गए प्रारंभिक जांच परिणामों का कोई औचित्य नहीं था जिसमें आयातों के पर्याप्त एवं सही आंकड़े उपलब्ध नहीं थे। निर्दिष्ट प्राधिकारी के पर्याप्त और सही आंकड़ों का दावा जांच परिणामों के तथ्यों के अनुसार अपेक्षित नहीं है। यह भी अनुरोध किया गया है कि जहां कोई अवशिष्ट निर्यातक नहीं है, वहां निर्दिष्ट प्राधिकारी ने अवशिष्ट निर्यातकों के लिए भी पाटनरोधी शुल्क अधिसूचित किया है और इस प्रकार के कार्य को न्यायोचित नहीं माना जा सकता। निर्दिष्ट प्राधिकारी की नीति तदर्थ और आकस्मिक स्वरूप की है। उन्हें आयातों के सही आंकड़े एकत्र करने और उसके बाद प्रारंभिक जांच परिणाम अधिसूचित करने के लिए और अधिक समय का इंतजार करना चाहिए था।

प्राधिकारी द्वारा जांच

37. प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंड एस से सौदेवार आयात सूचना प्राप्त की है। प्रतिवादी निर्यातक, आयातकों/उपभोक्ताओं द्वारा प्रदत्त सूचना तथा डीजीसीआईएंडएस की सूचना और याचिका में उल्लिखित सूचना का मिलान किया गया था और स्थिति निम्नानुसार है :-

विवरण	जांच अवधि
इंडोनेशिया के निर्यातक के उत्तर के अनुसार	***
आयातकों के उत्तर के अनुसार	
भिके इंडिया	***
पेनासोनिक	***
आयातकों के उत्तर के अनुसार कुल	***
याचिका के अनुसार	***

38. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रतिवादी निर्यातक द्वारा सूचित आयातों की वास्तविक मात्रा आयातकों अथवा याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों में सूचित आयातों की मात्रा से काफी अधिक है। डीजीसीआई एंड एस द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना भी वित्त वर्ष 2007-08 के लिए है जिसमें अप्रैल से जून, 2008, जो जांच अवधि का भाग है, की अवधि के लिए आयात के आंकड़े नहीं दिए गए हैं। अतः प्राधिकारी ने मात्रात्मक विश्लेषण करने के लिए प्रतिवादी निर्यातक द्वारा सूचित आयातों के आंकड़ों पर विचार किया है।

आयात की मात्रा और संबद्ध देश का हिस्सा

39. संबद्ध देश से संबद्ध उत्पाद के पाटित आयातों की मात्रा निम्नलिखित तालिका में दी गई है :

विवरण	2005-06	2006-07	2007-08	जुलाई 07 से जून, 08
आयात मात्रा (000 नग में)				
संबद्ध देश	8.62	30.51	211.91	695.04
अन्य देश	2,329.38	3,298.50	7,022.23	6,882.97
कुल आयात	2,338.00	3,329.01	7,234.14	7,578.00
आयातों में बाजार हिस्सा (%)				
संबद्ध देश	0.37	0.92	2.93	9.17
अन्य देश	99.61	99.06	97.07	90.83
उत्पादन	5,425	6,678	6,541	6,384
उत्पादन की तुलना में संबद्ध आयात	0.16	0.46	3.24	10.89

40. प्राधिकारी यह मानते हैं कि इस अवधि के दौरान संबद्ध देश से आयातों में समग्र रूप में, भारत में आयातों की तुलना में तथा भारत में उत्पादन की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है। साथ ही साथ अन्य देशों से हुए आयातों में गिरावट आई है।

आयात की मात्रा और संबद्ध देश का हिस्सा**एल पी डी इंडोनेशिया, ऑनिडा और मिक इलैक्ट्रॉनिक्स के विचार**

41. प्रारंभिक जांच परिणामों के पैरा 25 में आयात संबंधी आंकड़ों के बारे में दी गई तालिका अपूर्ण, अपर्याप्त, असत्य और भ्रामक है। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने आयात की मात्रा तथा संबद्ध देश के हिस्से के बारे में आंकड़े उपलब्ध कराने में अत्यधिक गोपनीयता का दावा किया है। निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह समझना चाहिए कि उनके पास संबद्ध देश से सही और पर्याप्त के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं और इसलिए उन्हें कुछ समय के लिए प्रारंभिक जांच परिणाम रोकने चाहिए थे और डी जी सी आई एंड एस के सही आंकड़ों का इंतजार करना चाहिए था जिनका वह प्रकटन कर सकते और उस आधार पर उचित जांच परिणाम निकाल सकते। यद्यपि, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने ऐसे समस्त आंकड़ों को *** के रूप में चिन्हित किया है, तथापि कोई सुविज्ञ गणितज्ञ जांच परिणामों में शामिल अलग-अलग तालिकाओं से निकटतम अनुमानों

के अनुसार आसानी से आंकड़ों की गणना कर सकता है । इसके अलावा, इनमें से अधिकांश आंकड़ों के बारे में भी घरेलू उद्योग ने गोपनीयता का दावा नहीं किया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

41. मात्रात्मक विश्लेषण करने के लिए प्राधिकारी ने प्रतिवादी निर्यातक द्वारा सूचित आयात मात्रा पर विचार किया है ।

42. वर्तमान याचिका के प्रयोजनार्थ याचिकाकर्ता ने देश में उत्पाद की मांग या खपत को घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री और समस्त स्रोतों से हुए आयातों की मात्रा के रूप में परिभाषित किया है । यह देखा जा सकेगा कि देश में उत्पाद की मांग में वर्तमान अवधि में सकारात्मक वृद्धि हुई है ।

000 नग में

	2005-06	2006-07	2007-08	जुलाई 07 से जून, 08
भारत में मांग	10,671	12,481	16,728	17,432
□ घरेलू उद्योग की बिक्री	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	149	157	161
□ अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	***	***	***	***
प्रवृत्ति	100	78	79	83
□ संबद्ध देश से आयात	9	31	212	695
प्रवृत्ति	100	344	2356	7722
□ अन्य देशों से आयात	2329	3298	7,022	6,883
प्रवृत्ति	100	142	302	296
□ भारत में कुल मांग	2338	3329	7,234	7,578
प्रवृत्ति	100	142	309	324
बाजार हिस्सा %				
□ घरेलू उद्योग	***	***	***	***
अनुपात	42.94	28.65	21.54	21.84
□ अन्य भारतीय उत्पादक	***	***	***	***
अनुपात	21.83	26.43	41.98	39.48

□ संबद्ध देश	***	***	***	***
	***	***	***	***
अन्य देश	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	149	157	161
घरेलू उत्पादकों का कुल हिस्सा	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	78	79	83

43. जांच अवधि के दौरान अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री मै. जे सी टी (3282) तथा मै. बी पी एल (526) की 000 नगों की बिक्री शामिल है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु की मांग में आधार वर्ष से जांच अवधि तक वृद्धि होती रही है। क्षति अवधि में इसमें लगभग 63% की वृद्धि हुई है। जैसा कि प्रारंभिक जांच परिणामों में नोट किया गया है, वर्ष 2005-06 और 2006-07 के बीच घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई और तत्पश्चात उसमें अत्यधिक गिरावट आई। इसके अलावा, अन्य भारतीय उत्पादकों के बाजार हिस्से में भी लगातार गिरावट आई। इस संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि जांच समूची क्षति अवधि की तुलना तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष के साथ करना उचित नहीं है। क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन संबंधी घटनाक्रम पर विचार किया जाना चाहिए।

44. प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संगत अवधि के दौरान पाटित आयातों के बाजार हिस्से में पर्याप्त वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप भारतीय उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है, जिससे प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव का पता चलता है।

क्षमता, उत्पादन, मांग, बिक्री, क्षमता उपयोग

ऑनिडा तथा मिर्क इलेक्ट्रॉनिक्स, एल पी डी इंडोनेशिया के विचार

45. अंतिम जांच परिणामों के पैरा 27 में देश में उत्पाद की मांग या खपत को घरेलू उत्पादकों की घरेलू बिक्री और समस्त स्रोतों से हुए आयातों की मात्रा के रूप में परिभाषित किया गया है। उसके नीचे दी गई तालिका में समग्र संख्या में क्षति अवधि के लिए मांग के कुल आंकड़े तथा बाजार हिस्से जैसी अन्य सूचना सूचीबद्ध संख्या के रूप में दी गई है। सूचीबद्ध सूचना से आयात के आंकड़े, घरेलू उद्योग/उत्पादकों आदि की घरेलू बिक्री निकाली गई है जिसे अवलोकनार्थ/अर्थनिरूपण हेतु नीचे दर्शाया गया है :-

46. उपर्युक्त तालिका से यह देखा जा सकता है कि प्रस्तावित क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में लगभग 63% की वृद्धि हुई है और घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री में 62% की वृद्धि हुई है, जिसमें लगभग एक जैसी वृद्धि का पता चलता है। इस प्रकार घरेलू उद्योग पर कोई मात्रात्मक प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है।

47. इस संबंध में, निर्दिष्ट प्राधिकारी के निर्धारण में विवेक के उचित इस्तेमाल का पता नहीं चलता है क्योंकि घरेलू उद्योग ने गलत आंकड़ों के साथ प्राधिकारी को भ्रमित किया है जिन पर निर्दिष्ट प्राधिकारी ने उनके पास पहले से उपलब्ध आंकड़ों के सत्यापन के बिना विचार किया है। वर्तमान जांच में सेमटेल कलर लि. एकमात्र घरेलू उद्योग है। कंपनी की प्रकाशित वार्षिक रिपोर्टों के अनुसार संबद्ध वस्तु की उत्पादन क्षमता तीन उत्पादन लाइनों में वर्ष 2005-06 के दौरान 5600000 नगो की थी। वर्ष 2006-07 में दो और लाइनें जोड़ी गई थीं और इस प्रकार क्षमता वर्ष 2006-07 से लेकर जांच अवधि तक बढ़कर 9400000 नग हो गई थी। तथापि, घरेलू उद्योग ने इसे वर्ष 2005-06 में 6500000, 2006-07 में 9050000 तथा 2007-08 से 10200000 नग होने का दावा किया है। क्षमता उपयोग की गणना इस असत्य आंकड़ों के आधार पर की गई है। निर्दिष्ट प्राधिकारी जांच परिणाम में उपयोग में लाने से पूर्व इन आंकड़ों को सुधारने में विफल रहे हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

48. उपर्युक्तानुसार उठाए गए मुद्दों की प्राधिकारी ने जांच की है और स्थिति निम्नानुसार है:

000 नग में

विवरण	2005-06	2006-07	2007-08	जुलाई 07 से जून, 08
क्षमता	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	139	157	157
उत्पादन	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	123	121	118
क्षमता उपयोग%	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	88	77	75
विक्री *	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	126	120	119
भाग	10,671	12,481	16,728	17,432

*बिक्री में मै. सेमटेल के लिए घरेलू तथा निर्यात बिक्री शामिल है।

49. जहां तक क्षमता का संबंध है, लाइन IV दिनांक 1 जुलाई, 2006 को और लाइन V 1 अगस्त, 2006 को पूंजीकृत की गई थी। इन दोनों लाइनों की कुल क्षमता 12 और 25 लाख नग वार्षिक थी। उपलब्ध क्षमता का आकलन करने के लिए प्राधिकारी ने वर्ष 2006-07 की अवधि के लिए लाइन IV हेतु 0.90 लाख नग और लाइन V हेतु 16.7 लाख नग की क्षमता जोड़ी है। यह 9050 लाख नग बनती है। तथापि वर्ष 2007-08 की अवधि के लिए

चूंकि पूर्ण क्षमता उपलब्ध थी, इसलिए 102 लाख नगों की उपलब्ध क्षमता निकालने के लिए 65 लाख नगों की मूल क्षमता में कुल क्षमता (12+25 लाख नग) जोड़ी गई थी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि मांग में वृद्धि के प्रतिक्रियास्वरूप घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन और बिक्री मात्रा में वृद्धि हुई है। यद्यपि क्षमता में *** लाख नग की वृद्धि हुई तथापि, उत्पादन में केवल *** लाख नगों की वृद्धि हुई जबकि मांग में *** लाख नग की वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग को देश में मौजूद मांग के बावजूद क्षमता उपयोग में कमी करनी पड़ी। इस संदर्भ में प्राधिकारी ने सत्यापित सूचना को स्वीकार किया है।

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव एलपीडी इंडोनेशिया, ऑनिडा तथा मिर्क इलेक्ट्रोनिक्स के विचार

50. किसी वस्तु की कीमत अनेक कारकों द्वारा संचालित होती है। यह प्रतिस्पर्धी की कीमत नहीं है जिससे घरेलू उद्योग की कीमत प्रभावित होती है, अपितु गुणवत्ता, प्रौद्योगिकी परिवर्तन, ग्राहक पसंद, उत्पादन लागत, पुरातनता आदि भी इसे प्रभावित करते हैं। इलेक्ट्रॉनिक बाजार में यह अधिक दृष्टव्य होता है और परिवर्तन तेजी से आते रहते हैं। विनिर्माता मॉडलों में परिवर्तन करने, विशेषताओं पर गौर करने की दिशा में तेजी से बढ़ते हैं ताकि संभावित ग्राहकों की जरूरत को पूरा किया जा सके। घरेलू उत्पादकों के लिए विश्व के अन्य भागों में हो रहे परिवर्तनों के साथ स्वयं को ढालने की जरूरत होती है, यदि वे बाजार में बने रहना चाहते हैं। जब कभी कोई नया उन्नत उत्पाद बाजार में आता है, तो ग्राहक उसकी ओर रुख करते हैं। इसलिए पुराने मॉडलों की कीमत कम हो जाती है। यदि घरेलू उद्योग ग्राहकों की नई जरूरतों के साथ तालमेल बिठाने में विफल रहता है तो उसे क्षति हेतु आयातों पर दोष देने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। उनके खुद के अनुरोध के अनुसार दो घरेलू विनिर्माताओं ने जांच अवधि में उत्पादन बंद कर दिया है। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने बंद होने की वजह का पता नहीं लगाया है। इस बात की काफी अधिक संभावना है कि उन्होंने गुणवत्ता बेहतर होने के कारण संबद्ध वस्तु का स्वयं आयात शुरू कर दिया हो। इस संबंध में, अनंतिम जांच परिणामों में कोई परिणाम उपलब्ध नहीं है।

51. इसी उत्पाद के बारे में चल रही अन्य जांच में यह देखा गया है कि सेमटेल कलर लि. को उनके खुद के अध्यक्ष की स्वीकारोक्ति के अनुसार अधिक लागत और नई उत्पादन लाइन 4 व 5 को स्थिर करने में विफलता के कारण घाटा हो रहा है। इस कंपनी पर अत्यधिक वित्तीय लागत का बोझ था, जिसके लिए वित्तीय पुनर्गठन की जरूरत थी। ऐसी स्थिति होने के कारण यह कंपनी अधिक उत्पादन वहन करने और बाद में अधिक क्षति रहित कीमत को सहन करने के लिए बाध्य है। ऐसी क्षति रहित कीमत उच्चतर क्षति मार्जिन के लिए काफी अधिक होगी। निर्दिष्ट प्राधिकारी को उत्पादन की उचित लागत एवं क्षति रहित कीमत निर्धारित करते समय लागत एवं क्षमता उपयोगिताओं में समस्त असमानताओं को समायोजित करना चाहिए था। परंतु, जांच परिणामों में निर्दिष्ट प्राधिकारी के इस प्रकार के विवेकपूर्ण विचार लुप्त हैं।

52. याचिका में दिए गए उत्पादन के आंकड़ों से घरेलू उद्योग ने लाइन 4 और लाइन 6 में अपना उत्पादन अभी स्थिर नहीं किया है। वर्ष 2005-06 में जब उसके पास प्रचालन की

केवल 3 लाइनें थीं, यह 63 लाख सी पी टी का उत्पादन कर सका। परंतु दो और लाइनें जोड़ने के बाद इसका उत्पादन बढ़कर 65 लाख सी पी टी हो गया। कंपनी अपना पूंजीगत पुनर्गठन पूरा नहीं कर सकी, जिसके लिए उसे तरलता की समस्याओं का भी सामना करना पड़ा। स्वजनिक क्षति के कुछेक कारण हैं। तथापि, निर्दिष्ट प्राधिकारी उन पर विचार करने में विफल रहे। निर्दिष्ट प्राधिकारी के जांच परिणामों से साधारणतः इस विचार की पुष्टि होती है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी का यह पूर्व निर्धारित विचार है कि घरेलू उद्योग को हुई किसी क्षति को आयातों के साथ जोड़ा जाए। इस संबंध में पूर्ववर्ती जांच के रिकॉर्डों का अवलोकन किया जाए।

53. औसत बिक्री कीमत में कभी कच्ची सामग्री की लागत में कभी के अनुरूप रही है। लाभप्रदता में आई कोई गिरावट का कारण नई उत्पादन लाइनों को स्थिर करने और उच्च ब्याज लागत तथा मूल्यहास के साथ तरलता की समस्या के बारे में कंपनी की असमर्थता को माना जा सकता है।

54. घरेलू उद्योग ने अपनी लागत संबंधी सूचना का कोई अगोपनीय रूपांतरण प्रदान नहीं किया है। जांच अवधि के लिए कंपनी की वार्षिक रिपोर्ट भी उपलब्ध कराई गई है। ऐसी सूचना के अभाव में हम किसी उचित जांच हेतु आगे कोई निविष्टि उपलब्ध कराने में अक्षम हैं। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति की सूचना के अभाव में हम कीमत कटौती के बारे में कोई टिप्पणी नहीं दे सकते। इस संबंध में, निर्दिष्ट प्राधिकारी का अभिमत घरेलू उद्योग के दावे की पुनरावृत्ति प्रतीत होती है जिसे बढ़ा-चढ़ाकर दर्शाया गया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

55. प्राधिकारी नोट करते हैं कि रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना से यह पता नहीं चलता है कि उपभोक्ताओं की नई जरूरतों के कारण आयात जरूरी थे। अधिक लागत तथा नई उत्पादन लाइनों की स्थापना के मुद्दे की पूर्ववर्ती जांच में विस्तृत जांच की जा चुकी है और इस जांच में भी उन पर ध्यान दिया गया है। लागत संबंधी सूचना और निवल बिक्री प्राप्ति के बारे में सूचना का सारांश संभव नहीं है। यह निर्दिष्ट प्राधिकारी पर निर्भर करता है कि वह कीमत कटौती का निर्धारण करे। नियमों के अंतर्गत निर्धारित स्कीम के अनुसार हितबद्ध पार्टियों के लिए संगत सूचना उपलब्ध कराना अपेक्षित है और तत्पश्चात् निर्दिष्ट प्राधिकारी के लिए यह अपेक्षित है कि वह इस आशय का अपना स्वतंत्र निष्कर्ष निकालें कि किस प्रकार प्राधिकारी ने इस आशय का अपना स्वतंत्र निष्कर्ष निकाला है। घरेलू उद्योग यह आरोप लगा सकता है कि प्राधिकारी ने दावानुसार निर्यात कीमत की अनुमति दी है, जैसा कि इस मामले में है। तथापि, यह दावा प्राधिकारी द्वारा किए गए आंकड़ों के वास्तविक सत्यापन पर आधारित है। अतः प्राधिकारी पर उन तथ्यों को दोहराने का आरोप नहीं लगाया जा सकता जिनके संबंध में घरेलू उद्योग या प्रतिवादी निर्यातक ने दावा किया है क्योंकि उपर्युक्तानुसार संक्षेपण घरेलू उद्योग एवं प्रतिवादी निर्यातक दोनों के सत्यापित आंकड़ों पर निर्धारित हैं। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि एक उपभोक्ता होने के कारण ऑनिडा को घरेलू उद्योग तथा आयातों द्वारा प्रभारित कीमतों के बारे में बेहतर जानकारी होनी चाहिए। इस सीमा तक ऑनिडा को कीमत में अंतर की मात्रा के बारे में जानकारी होनी चाहिए थी।

अन्य क्षति मापदंड**एन पी डी इंडोनेशिया, ऑनिडा तथा मिर्क इलेक्ट्रॉनिक्स के विचार**

56. क्षति के अन्य मापदंड केवल कीमत और मात्रात्मक प्रभाव का परिणाम हैं । दोनों के नकारात्मक प्रभाव के कारण अन्य सभी मापदंडों से केवल एक समान प्रवृत्ति का पता चलता है। तथापि, इस संबंध में प्रदत्त आंकड़े असत्य हैं और बढ़ा-चढ़ाकर दर्शाए गए हैं । इस संबंध में अधिप्रमाणित सूचना एकत्र करने में जब भी हम समर्थ हो जाएंगे हम अपने अभिमतों की पुष्टि करने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं ।

57. घरेलू उद्योग कई आंतरिक समस्याओं और अंतर्राष्ट्रीय पुरातनता एवं अप्रतिस्पर्धात्मकता का सामना कर रहा है । इसकी उत्पादन लागत काफी अधिक है । यह पारंपरिक सी आर टी में मुख्यतः संलग्न है जबकि उपभोक्ता प्रौद्योगिकीय रूप से अधिक उन्नत उत्पादों की मांग करते हैं । इस प्रकार क्षति का कारण पाटन नहीं है । इस प्रकार कारणात्मक संबंध के मुद्दे पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए ।

58. अंतर्राष्ट्रीय बाजार में घरेलू उत्पाद के खराब निष्पादन पर विचार किया जाना चाहिए ।

59. याचिका में प्रस्तुत आंकड़े और अनंतिम जांच परिणामों में विचारित आंकड़े त्रुटिपूर्ण तथा एक दूसरे के विपरीत हैं और उनके वार्षिक लेखों के अनुसार इसी प्रकार के आंकड़ों से भिन्न हैं ।

60. सी आर टी के अधिकांश उत्पादकों ने विश्व भर में क्षति अवधि के दौरान उत्पादन बंद कर दिया है जबकि प्रचालनकर्ताओं को घाटा हुआ है और उनकी क्षमताओं में कमी आई है । मौजूदा उत्पादकों की मालसूचियों के कारण क्षति अवधि के कारण सी आर टी की कीमत में वैश्विक रूप से कमी आई है; इस प्रकार यह परिदृश्य भारत तक ही सीमित नहीं है ।

61. समायोजन भी किए जाने चाहिए क्योंकि ये इंडोनेशिया के लिए आरोपणीय क्षति और पूर्ववर्ती जांच में अन्य देशों द्वारा किए गए पाटन के कारण आरोपणीय क्षति हेतु पृथक जांच अवधि के साथ अलग जांचगत कार्रवाई है । इन्हें एक साथ नहीं मिलाया जा सकता । इस कारण से भी कोई भूतलक्षी शुल्क नहीं हो सकता है । इस प्रकार पूर्ववर्ती जांच में उल्लिखित अंतिम जांच परिणामों के अनुसार अन्य देशों के कारण हुई क्षति इंडोनेशिया के कारण हुई क्षति से अलग रखी जानी चाहिए ।

62. सेमटेल को उसकी 14" तथा 15" में अवस्थिति होने के कारण एक तरजीही आपूर्तिकर्ता होगा, जहां आयात घरेलू मांग की पूर्ति में उसकी असमर्थता के कारण ही होते हैं। यदि यह खासकर फ्लेट और स्लिम रूपांतरणों में 21"-29" के संबंध में गुणवत्ता की समस्याओं का सुधार कर सकता है । तथापि, इसने लगातार घटिया निष्पादन किया है ।

63. घरेलू उत्पादक भारतीय रूपए की गतिशीलता द्वारा भी प्रभावित हुए हैं जिसके मूल्य में जांच अवधि में लगभग 8% का सुधार हुआ है। क्षति मार्जिन का निर्धारण करते समय इसका समायोजन किया जाए।

64. भारतीय रूपए की मजबूती के कारण क्षति मार्जिन की गणना भारतीय रूपए में की जानी अपेक्षित है। इसके अलावा, रूपए के मूल्य में गिरावट या मजबूती के कारण न केवल उत्पाद की आयात कीमत पर प्रभाव पड़ता है अपितु उत्पादन लागत एवं बिक्री कीमत पर भी उतना ही प्रभाव पड़ता है। अतः यह कहना उचित होगा कि घरेलू उद्योग को भारतीय रूपए की मजबूती के कारण क्षति हुई है।

घरेलू उद्योग के विचार

65. ये तर्क पूर्णतः पुष्टिकृत नहीं हैं। घरेलू उद्योग वस्तुतः पारंपरिक सी आर टी तक सीमित नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा बड़े पैमाने पर प्लेट सी आर टी का उत्पादन कर उसकी आपूर्ति की जा रही है। यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग आयात कीमतें उचित रहने के समय तक लाभ कमा रहा था।

66. वर्तमान प्रयोजन हेतु केवल घरेलू प्रचालन प्रासंगिक हैं। घरेलू एवं निर्यातों के संबंध में घरेलू उद्योग ने निष्पादन विभाजित किया है।

67. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने अस्थापित सूचना को स्वीकार किया है और उन्हें एक पुराने के विपरीत नहीं पाया है।

68. इस तर्क से इस बात की पुष्टि होती है और समर्थन मिलता है, जिसके बारे में घरेलू उद्योग कुल मिलाकर तर्क कर रहा है। जब यह विश्वव्यापी स्थिति है तो उत्पाद के पाटन द्वारा उत्पन्न समस्या के बारे में घरेलू उद्योग की चिंता बढ़ जाती है। तथापि, यह दोहराया जाता है कि उल्लिखित समस्याएं केवल अन्य देशों में ही विद्यमान हैं न कि भारतीय बाजार में। वैश्विक बाजार जहां मांग में पर्याप्त गिरावट आई है, के विपरीत भारत में इस उत्पाद की मांग में पर्याप्त वृद्धि प्रदर्शित होती है।

69. इस तर्क का कानूनन कोई कज्रूद नहीं है। अन्य पाटित आयातों के कारण हुई क्षति को अलग करना अपेक्षित नहीं है। नियमों में अपाटित आयातों के कारण हुई क्षति को अलग करने का उपबंध है।

70. यह सही नहीं है कि 14, 15 तथा 20" की श्रेणी के आयात मांग की पूर्ति करने में घरेलू उद्योग की अक्षमता के कारण हुए हैं। इसके अलावा, 14 तथा 15" के लिए घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत क्षति रहित कीमत से भी कम है। जहां तक 21" - 29" का संबंध है, गुणवत्ता के बारे में दिए गए तर्कों में कोई आधार नहीं है। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा पूर्ववर्ती मामले से भी इस मुद्दे की जांच की गई है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

71. प्राधिकारी ने सत्यापित सूचना पर भरोसा किया है और उसे किसी असत्य या बढ़ा चढ़ाकर किए गए दावों की जानकारी नहीं है।

घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

72. नियम 18 के उपनियम (2) में किए गए उल्लेख के अनुसार जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत में पर्याप्त कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में अन्यथा पर्याप्त स्तर तक गिरावट आई है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।

73. संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत पर पड़े प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण यदि कोई हो, के संबंध में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की भारित औसत उत्पादन लागत, भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) तथा क्षति रहित कीमत (एनआईपी) की तुलना संबद्ध देश से आयातों की पहुंच लागत के साथ की गई है।

विचाराधीन अवधि के दौरान कीमत का मूल्यांकन

74. प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान आयात कीमतों की प्रवृत्ति की जांच प्रत्येक आकार के लिए अलग-अलग और संबद्ध देश के लिए संचयी रूप से की है। संगत सूचना नीचे दर्शायी गई है :

रु. प्रति नग.

सीआईएफ निर्यात कीमत	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि	कीमत में गिरावट
14"		***	***	***	38%
15"					
20"		***	***	***	25%
21"	***	***	***	***	11%
21" प्लेट	***	***	***	***	36%
21" स्लीम			***	***	23%

29"	***		***		
-----	-----	--	-----	--	--

75. क्षति अवधि के दौरान संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु की सीआईएफ आयात कीमत में गिरावट आई है। कीमत में यह गिरावट 11% से 38% तक रही है। उच्च मात्रा वाले प्रकार (14" तथा 21" फ्लेट) के संबंध में कीमत में क्रमशः 36% तक गिरावट आई है।

76. प्राधिकारी ने यह जांच की है कि क्या कीमत में उपर्युक्त गिरावट को उत्पादन लागत में आई गिरावट से जोड़ा जा सकता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि निर्यातक ने इस संबंध में संगत सूचना उपलब्ध नहीं कराई है, तथापि घरेलू उद्योग ने समूची अवधि के लिए सूचना उपलब्ध कराई है। यह नोट किया जाता है कि यद्यपि उत्पादन लागत में गिरावट आई है, तथापि उपर्युक्त गिरावट उत्पादन लागत में आई गिरावट से अधिक रही है।

कीमत कटौती

77. कीमत कटौती का निर्धारण करने के लिए प्राधिकारी ने निर्यातक तथा आयातकों/प्रयोक्ताओं द्वारा प्रस्तुत उत्तरों की जांच की। इस प्रयोजनार्थ सीपीटी के प्रत्येक प्रकार की तुलना अलग से की गई है। प्रत्येक प्रकार के लिए कीमत कटौती और उसके बाद सीपीटी के लिए भारित औसत का समग्र निर्धारण किया गया है जो *** नग की मात्रा पर *** रूपए प्रति नग बनता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कीमत कटौती 7-12% है।

78. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इस अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट आई है जिसका कारण आयातों की पहुंच कीमत में गिरावट है।

पाटित आयातों का कीमत ह्रासकारी तथा न्यूनकारी प्रभावः

79. इस बात की जांच करने के लिए कि क्या आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में ह्रास या उनमें न्यूनीकरण हो रहा है, प्राधिकारी ने कच्ची सामग्री की लागत और बिक्री कीमत में रुझानों की जांच की है। संगत स्थिति निम्नानुसार है :-

	2005-06	2006-07	2007-08	भारतीय रूपए जुलाई, 07 से जून, 08
कच्चा सामग्री लागत				
	***	***	***	***

	100	97	95	96
➤ सूचीबद्ध		***	***	***
➤ 15"		100	96	96
➤ सूचीबद्ध	***	***	***	***
➤ 20"	100	99	100	100
➤ सूचीबद्ध	***	***	***	***
➤ 21" पारंपरिक	100	96	113	112
➤ सूचीबद्ध	***	***	***	***
➤ 21" प्लेट	100	88	84	84
➤ सूचीबद्ध		***	***	***
➤ 29"		100	107	111
➤ सूचीबद्ध				
बिक्री कीमत	***	***	***	***
➤ 14"	100	87	76	77
➤ सूचीबद्ध		***	***	***
➤ 15"		100	85	85
➤ सूचीबद्ध	***	***	***	***
➤ 20"	100	90	84	85
➤ सूचीबद्ध	***	***	***	***
➤ 21" पारंपरिक	100	89	82	85
➤ सूचीबद्ध	***	***	***	***
➤ 21" प्लेट				

➤ सूचीबद्ध	100	79	72	74
➤ 29"		***	***	***
आयातों की पहुंच कीमत				***
➤ 14"				
➤ 15"				
➤ 20"				***
➤ 21" पारंपरिक				***
➤ 21" प्लेट				***
➤ 29"				

80. घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में तदनुरूपी और उस सीमा तक गिरावट आई है, जितनी कि आयातों के पहुंच कीमत में आई है। कीमत में अत्यधिक गिरावट आई है जिससे घरेलू उद्योग जांच अवधि के दौरान उत्पादन लागत से काफी कम कीमत पर उत्पाद की बिक्री करने के लिए बाध्य हुआ है।

81. उपर्युक्त पर विचार करते हुए प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पाटित आयातों में समग्र रूप में और भारत में उत्पादन एवं खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है। जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि आयातों की पहुंच कीमत में अत्यधिक गिरावट आई है। इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में अत्यधिक गिरावट आई है। यद्यपि कच्ची सामग्री की लागत में गिरावट आई थी तथापि बिक्री कीमत में गिरावट कच्ची सामग्री की लागत में आई गिरावट से काफी अधिक थी। इस प्रकार संबद्ध देश से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग कीमत कम करने के लिए बाध्य हुआ। कीमत में ऐसी गिरावट काफी अधिक और वास्तविक थी।

क्षति के अन्य मापदंडों की जांच

82. घरेलू उद्योग की मात्रा और कीमत पर पाटित आयातों और आयात की मात्रा एवं मूल्य के प्रभाव, घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री के साथ-साथ विभिन्न खंडों के बाजार हिस्से सहित मांग की पद्धति जैसे विभिन्न संकेतकों की जांच करने के

बाद जिन अन्य आर्थिक मापदंडों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति की मौजूदगी का पता चल सकता है उनका विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है :-

लाभ

	2005-06	2006-07	2007-08	जुलाई 07 से जून 08
उत्पादन की औसत लागत (रु/नग)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	107	101	101
औसत बिक्री कीमत (रु/नग)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	88	74	74
प्रति नग लाभ एवं हानि (रु/नग))	***	(***)	(***)	(***)
सूचीबद्ध	100	-32	-101	-108
घरेलू बिक्री से कुल लाभ/हानि (लाख रुपए)	***	(***)	(***)	(***)
सूचीबद्ध	100	(48)	(159)	(174)

83. यह देखा जाता है कि इन वर्षों के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में भारी गिरावट आई है । इसके विपरीत घरेलू उद्योग की पूर्व में अच्छी लाभप्रदता रही थी (आयात पिछले कई वर्षों से घरेलू उद्योग के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं)। तथापि, क्षति अवधि के दौरान स्थिति अत्यधिक खराब हो गई जब घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण तेजी से गिरावट आई । परिणामतः घरेलू उद्योग को अत्यधिक वित्तीय घाटा हुआ ।

84. प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता के लिए ब्याज एवं मूल्यहास से पूर्व लाभ का निर्धारण किया । स्थिति निम्नानुसार है :-

	2005-06	2006-07	2007-08	लाख रुपए में जुलाई 07 से जून 08
विवरण				
कर पूर्व लाभ	***	(***)	(***)	(***)
सूचीबद्ध	100	-48	-159	-174

ब्याज	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	153	127	128
मूल्य ह्रास	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	151	170	181
ब्याज तथा मूल्यह्रास का योग	***	***	***	***
ब्याज एवं मूल्यह्रास में वृद्धि (2004-05 की तुलना में) सूचीबद्ध	100.00	151.93	148.71	154.03
ब्याज एवं मूल्यह्रास से पूर्व लाभ	***	***	(***)	(***)
सूचीबद्ध	100.00	36.08	(29.67)	(36.40)
ब्याज एवं मूल्यह्रास से पूर्व लाभ में गिरावट (2005-06 की तुलना में)	-	(***)	(***)	(***)
सूचीबद्ध		(100)	(203)	(213)

85. उपर्युक्त से यह देखा जाता है कि यदि कंपनी की ब्याज एवं मूल्यह्रास लागत आधार वर्ष के समान ही रही होती तो, लाभ में भारी गिरावट आई होती। उपर्युक्त से यह भी देखा जाता है कि ब्याज एवं मूल्यह्रास से पूर्व लाभ में क्षति अवधि के दौरान भारी गिरावट प्रदर्शित होती है।

निवेश पर आय और नकद प्रवाह

	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
लगाई गई पूंजी पर आय (%)	***	***	(***)	(***)
सूचीबद्ध	100.00	3.89	(58.46)	(67.83)
नकद लाभ (लाख रुपए)	***	***	(***)	(***)
सूचीबद्ध	100.00	4.97	(71.50)	(80.08)

86. यह देखा जाता है कि समूची क्षति अवधि के दौरान लगाई गई पूंजी पर आय और नकद प्रवाह में गिरावट आई है। वर्ष 2006-07 तक लगाई गई पूंजी पर आय सकारात्मक रही थी। तथापि, यह वर्ष 2007-08 से ऋणात्मक हो गई और यह स्थिति जांच अवधि में और अधिक खराब हो गई।

87. जहां तक नकद प्रवाह का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के नकद प्रवाह में तेजी से गिरावट आई है। घरेलू उद्योग जांच अवधि के दौरान सकारात्मक नकद प्रवाह की स्थिति से ऋणात्मक नकद प्रवाह की स्थिति में आ गया। प्राधिकारी ने सीपीटी के उत्पादन और बिक्री के संबंध में नकद लाभ की स्थिति की भी जांच की। यह देखा

गया कि नकद लाभ में भी इसी स्थिति का पता चलता है । पूर्ववर्ती वर्षों में नकद लाभ सकारात्मक है और यह जांच अवधि में ऋणात्मक बन गया ।

मालसूची

मात्रा 000 नग में

मालसूची	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
अथ मालसूची	***	***	***	***
सूचीबद्ध	166	271	108	168
इति मालसूची	***	***	***	***
सूचीबद्ध	271	108	144	86
औसत मालसूची	***	***	***	***
सूचीबद्ध	218	190	126	127

88. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु का सामान्यतः उत्पादन पुष्टिकृत ऑर्डरों पर किया जाता है । अतः घरेलू उद्योग के पास मालसूची सामान्यतः पुष्टिकृत ऑर्डरों के संबंध में रहेगी ।

उत्पादकता

आंकड़े 000 में

	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
प्रति कर्मचारी उत्पादकता (प्रति कर्मचारी नगों की संख्या)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	103	120	108
प्रति दिवस उत्पादकता	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	123	121	118

89. यह देखा जाता है कि वर्ष 2007-08 तक सुधार होने के बाद घरेलू उद्योग की उत्पादकता में गिरावट आई ।

रोजगार तथा मजदूरी

	2005-06	2006-07	2007-08	जांच अवधि
कर्मचारियों की संख्या	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	119	101	101
मजदूरी (लाख रुपए में)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	159	226	216
प्रति कर्मचारी मजदूरी (लाख रुपए में)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	134	224	214

90. यह देखा जाता है कि रोजगार के स्तर में गिरावट आई है । यह गिरावट संविदा श्रमिकों के स्तर में कमी के कारण आई है । प्रति कर्मचारी औसत मजदूरी वृद्धि में भी आधार वर्ष की तुलना में दोगुनी वृद्धि हुई है ।

वृद्धि

91. घरेलू उद्योग के विभिन्न आर्थिक मापदंडों पर विचार करते हुए यद्यपि मांग, घरेलू उद्योग की बिक्री, क्षमता तथा उत्पादन में सकारात्मक वृद्धि हुई थी, तथापि क्षमता उपयोग, अंशदान मार्जिन, लाभप्रदता, नकद प्रवाह तथा निवेश पर आय के संबंध में वृद्धि ऋणात्मक रही थी ।

क्षति संबंधी निष्कर्ष :

92. उपर्युक्त क्षति मापदंडों की जांच से यह पता चलता है कि क्षति अवधि के दौरान मांग में 63% की वृद्धि हुई थी । मांग में समग्रतः पर्याप्त वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन और बिक्री में वृद्धि हुई । तथापि, बिक्री में वृद्धि मांग में हुई वृद्धि से काफी कम रही थी । परिणामतः क्षमता उपयोग कम हुआ । संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयात वर्ष 2005-06 में *** लाख नग से बढ़कर जांच अवधि में *** लाख नग हो गए । मांग के संबंध

में संबद्ध देश से आयातों का हिस्सा वर्ष 2005-06 में 0.08% से बढ़कर जांच अवधि में 3.99% हो गया जबकि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई । यह बाजार में बेची जा रही सीपीटी के विभिन्न आकारों की कीमत में सतत गिरावट आई थी । कीमत में इस गिरावट का निवारण लागत में आई गिरावट से नहीं हो सका । परिणामतः निर्यातक ने क्षति अवधि में अपनी कीमतों में सतत कमी की और घरेलू उद्योग समूची अवधि में अपनी कीमतों में लगातार कमी करने के लिए बाध्य हुआ । परिणामतः घरेलू उद्योग की कीमत में उपर्युक्तानुसार भारी कमी की गई । कीमत में अत्यधिक हास के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के लाभ, निवेश पर आय और नकद प्रवाह की स्थिति अत्यधिक खराब हो गई । घरेलू उद्योग को भारी वित्तीय घाटा हुआ, निवेश पर ऋणात्मक आय प्राप्त हुई, नकद प्रवाह और नकद लाभ ऋणात्मक रहा । अतः प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि लाभ, निवेश पर आय और नकद प्रवाह के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में भारी गिरावट आई । यह गिरावट अत्यधिक और वास्तविक थी । इस प्रकार विभिन्न मापदंडों से सामूहिक और संचयी रूप से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।

कारणात्मक संबंध

एल पी डी इंडोनेशिया, ऑनिडा तथा मिर्क इलेक्ट्रोनिक्स के विचार

93. हमें आरोपित पाटन हेतु क्षति के कारणात्मक संबंध के बारे में निर्दिष्ट प्राधिकारी के जांच परिणामों के प्रति आपत्ति है । घरेलू उद्योग कई आंतरिक समस्याओं तथा अंतर्राष्ट्रीय पुरातनता एवं अप्रतिस्पर्धात्मकता का सामना कर रहा है । इसकी उत्पादन लागत अधिक है । यह मुख्यतः पारंपरिक सी आर टी का उत्पादन करता है । तथापि, अधिकांश अग्रणी देशों में उपभोक्ता जिनमें भारतीय ग्राहकों का एक बड़ा भाग भी शामिल है, एल सी डी, प्लाज्मा टी वी आदि की ओर अग्रसर हुए हैं । नई प्रौद्योगिकी अपनाने में घरेलू उद्योग की अक्षमता के कारण उनका अंतर्राष्ट्रीय बाजार एवं घरेलू बाजार छिन रहा है । प्रारंभिक जांच परिणामों में आरोपित पाटन हेतु पुष्टिकृत क्षति के कारणात्मक संबंध पर पुनर्विचार करने की जरूरत है ।

94. एक अन्य तथ्य अंतर्राष्ट्रीय बाजार में घरेलू उद्योग के खराब निष्पादन का रहा है, जिस पर विचार किया जाना चाहिए । वर्ष 2005-06 में घरेलू उद्योग ने सी पी टी के 1670000 नगों की बिक्री की थी । जांच अवधि के दौरान यह घटकर 419000 नग हो गई । वर्ष 2005-06 की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की निर्यात बिक्री घटकर 25% हो गई । इसी अवधि के दौरान मांग में वृद्धि के अनुरूप उनकी घरेलू बिक्री में 62% की वृद्धि हुई है । अतः निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस कारण का विश्लेषण करने में अपने विवेक का इस्तेमाल करना चाहिए था कि घरेलू उद्योग ने अपना अंतर्राष्ट्रीय बाजार क्यों गंवाया है । इसका कारण चुनौती का सामना करने में उनकी अप्रतिस्पर्धात्मकता में निहित है । घरेलू उद्योग को क्षति, यदि कोई हो, का कारण उसकी आंतरिक समस्याओं को माना जा सकता है न कि आरोपित पाटन को । यदि घरेलू उद्योग अपने निर्यात बाजार में हुई समान वृद्धि को बरकरार रखने में समर्थ रहा होता तो वह अपनी संवर्धित क्षमता (क्षमता 5600000 नग से बढ़ाकर 9400000 नग की गई) के 93% का क्षमता उपयोग करने में समर्थ रहा होता । इस प्रकार कम उत्पादन, कम क्षमता उपयोग तथा कुल बिक्री मात्रा का कारण वर्ष 2005-06 के स्तर

पर अपने निर्यात बाजार को बढ़ाने या उसे बरकरार रखने में उसकी अक्षमता को माना जा सकता है। प्रारंभिक जांच परिणामों में इस तथ्य का समाधान नहीं किया गया है।

95. याचिका में प्रस्तुत आंकड़े तथा अनंतिम जांच परिणामों में विचारित आंकड़े प्रतिपूर्ण तथा एक-दूसरे के विपरीत हैं और इनमें उनके वार्षिक लेखों में उल्लिखित इसी प्रकार के आंकड़ों के अनुसार अंतर है। ऐसा प्रतीत होता है कि समूची प्रक्रिया आधारभूत आंकड़ों की सत्यता सुनिश्चित किए बिना घरेलू उद्योग को प्रसन्न किए बिना हड़बड़ी में अनंतिम शुल्क लगाने की रही है।

96. इसके अलावा, पूर्ववर्ती जांच के रिकॉर्डों से यह स्पष्ट हो जाता है कि ई यू ने पाटन एवं क्षति के बारे में निर्धारण करने के बाद कोई कारणात्मक संबंध नहीं पाया है। इसके विपरीत थाइलैंड ने मलेशिया पर पाटनरोधी शुल्क लगाया परंतु वह थाई सी आर टी उद्योग की सुरक्षा करने में विफल रहा, जिसे किसी भी हालत में बचाया नहीं जा सका। सी आर टी के अधिकांश उत्पादकों ने विश्व भर में क्षति अवधि के दौरान अपना प्रवाहन बंद कर दिया है जबकि प्रवाहनकर्ताओं को धाटा हुआ है और उन्होंने क्षमता में कमी की है। एल सी डी की घटती हुई कीमतों (पूर्ववर्ती जांच के रिकॉर्ड के अनुसार एल सी डी तथा सी आर टी टी वी के बीच 2:1 का कीमत अंतर रखना होता है अन्यथा सी आर टी टी वी उद्योग जीवित नहीं रह सकता) के कारण क्षति अवधि के दौरान सी आर टी की कीमत में तीव्र रूप से कमी आई है। इस प्रकार यह वैश्विक परिदृश्य भारत तक सीमित नहीं था और इसका कारण भारत तथा ई यू के लिए अनन्य नहीं हो सकता और इस प्रकार कारणात्मक संबंध का निर्धारण सही निर्धारण नहीं है। पूर्ववर्ती जांच में ई यू के जांच परिणाम दायर किए गए थे, जिनका अवलोकन किया जा सकता है और जिन पर भरोसा किया जा सकता है। एल पी डी-1 तथा अन्य एल पी डी कंपनियों में इस वैश्विक कीमत ह्रास तथा न्यूनतम कीमतों का प्रसारण हुआ है।

97. समायोजन भी किए जाने चाहिए क्योंकि ये इंडोनेशिया के लिए आरोपणीय क्षति और पूर्ववर्ती जांच में अन्य देशों द्वारा किए गए पाटन के कारण आरोपणीय क्षति हेतु पृथक जांच अवधि के साथ अलग जांचगत कार्यवाई है। इन्हें एक साथ नहीं मिलाया जा सकता। इस कारण से भी कोई भूतलक्षी शुल्क नहीं हो सकता है। इस प्रकार पूर्ववर्ती जांच में उल्लिखित अंतिम जांच परिणामों के अनुसार अन्य देशों के कारण हुई क्षति इंडोनेशिया के कारण हुई क्षति से अलग रखी जानी चाहिए।

98. सेमटेल को उसकी 14" तथा 15" में अवस्थिति होने के कारण एक तरजीही आपूर्तिकर्ता होगा, जहां आयात घरेलू मांग की पूर्ति में उसकी असमर्थता के कारण ही होते हैं। यदि यह खासकर प्लेट और स्लिम रूपांतरणों में 21"-29" के संबंध में गुणवत्ता की समस्याओं का सुधार कर सकता है। तथापि, इन श्रेणियों और न्यूनतम स्वीकार्य सीमाओं से कम श्रेणियों में सी आर टी की आपूर्तियों में इसने लगातार घटिया निष्पादन किया है। पूर्ववर्ती जांच रिकॉर्डों में घरेलू सी आर टी 21" और उससे अधिक के बारे में सी आर टी टी वी संयोजन लाइन में लगातार घटिया गुणवत्ता दर्ज किए जाने का साक्ष्य मौजूद है।

99. घरेलू उत्पादक भारतीय रूपए की गतिशीलता द्वारा भी प्रभावित हुए हैं जिसके मूल्य में जांच अवधि में लगभग 8% का सुधार हुआ है। क्षति मार्जिन का निर्धारण करते समय इसका समायोजन किया जाए।

प्राधिकारी द्वारा जांच

100. यह आरोप तथ्यरहित और निराधार है कि याचिका में प्रस्तुत आंकड़े और अनंतिम जांच परिणामों में विचारित आंकड़े त्रुटिपूर्ण तथा एक दूसरे के विपरीत हैं और इनमें उनके वार्षिक लेखों के अनुसार इसी प्रकार के आंकड़ों की दृष्टि से अंतर है। इस आशय का कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है और उस सीमा तक इस आरोप को संज्ञान में नहीं लिया जा सकता। इसके अलावा, लगाए गए आरोप के अनुसार घरेलू उद्योग की अक्षमता के बारे में मात्र उल्लेख को इस आशय का कोई साक्ष्य प्रदान किए बिना उसके अंकित मूल्य के रूप में नहीं लिया जा सकता। घरेलू उद्योग के सत्यापित आंकड़ों से ऐसी किसी स्थिति का पता नहीं चलता है। प्राधिकारी द्वारा समस्त हितबद्ध पार्टियों की जानकारी में यह बात भी लाई गई है कि संबद्ध देश से हुए आयातों तथा पाटनरोधी शुल्क के अधीन अन्य देशों से हुए आयातों के संबंध में क्षति विश्लेषण को आपस में संबद्ध नहीं किया गया है। घरेलू उद्योग को हुई क्षति के कारण के बारे में अपना निष्कर्ष निकालने के लिए और पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के अनुसार तथा यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के नियम 11 के अंतर्गत अनुबंध-II के पैरा V के अनुसार प्राधिकारी ने समस्त ज्ञात कारकों के प्रभाव और घरेलू उद्योग की स्थिति पर उनके परिणामों की जांच की। पाटित आयातों से भिन्न ज्ञात कारकों, जिनसे साथ-साथ घरेलू उद्योग को क्षति पहुंच सकती है, की जांच भी की गई थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इन अन्य कारकों से हुई संभावित क्षति पाटित आयातों से नहीं हुई है।

अन्य ज्ञात कारकों की जांच

अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा तथा कीमत

101. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान कुल आयातों में से अन्य देशों से आयात की मात्रा 39.48% रही है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि अन्य देशों से हुए आयातों पर पहले से ही अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लागू है जिसकी समानांतर जांच में चीन, कोरिया, मलेशिया और थाइलैंड शामिल हैं।

मांग में कमी और/अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन

102. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि में मांग में कोई कमी नहीं आई है। इसके विपरीत, क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की समग्र मांग में पर्याप्त सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित हुई है। क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की मांग में 63% की वृद्धि प्रदर्शित हुई है। घरेलू बाजार में उत्पाद की खपत पद्धति में ऐसा कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है जिसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण माना जा सके।

विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

103. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु का एकमात्र बाजार है जहां संबद्ध देश से पाटित आयात घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु से प्रतिस्पर्धा करते हैं। सीपीटी के विभिन्न प्रकारों के आयात की बिक्री उसी बाजार में की जा रही है जहां घरेलू उद्योग सीपीटी की बिक्री कर रहा है।

104. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग में प्रचलित प्रतिबंधात्मक व्यवहार का ऐसा कोई साक्ष्य नहीं है प्राधिकारी की जानकारी में लाया गया है जिसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण माना जा सके, जैसा कि।

प्रौद्योगिकी विकास

105. रिकॉर्डों की जांच के आधार पर प्राधिकारी को यह मानने का प्रस्ताव है कि प्रौद्योगिकी विकास घरेलू उद्योग को हुई क्षति का एक संगत कारक नहीं रहा है।

निर्यात निष्पादन

106. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की निर्यात मात्रा में गिरावट आई है। तथापि, विभिन्न क्षति संकेतकों के संबंध में निष्पादन का निर्धारण केवल घरेलू उद्योग के बारे में किया गया है। इस प्रकार प्राधिकारी का यह मानने का प्रस्ताव है कि घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन में गिरावट के परिणामस्वरूप नहीं हुई है।

घरेलू उद्योग की उत्पादकता

107. प्रति कर्मचारी उत्पादन के संबंध में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

कारणात्मक संबंध के बारे में निष्कर्ष

108. उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी यह मानते हैं कि अन्य कारकों की वजह से घरेलू उद्योग को हुई क्षति पाटित आयातों के परिणामस्वरूप कीमत में आई गिरावट की तुलना में अत्यधिक नगण्य है। घरेलू उद्योग की स्थिति में क्षति अवधि के दौरान वास्तविक गिरावट आई है जिसमें पाटित आयातों के कारण और अधिक वृद्धि हुई है। प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई है।

मुद्रा**एल पी डी इंडोनेशिया, ऑनिडा तथा मिर्क इलेक्ट्रॉनिक्स के विचार**

109. जांच अवधि की तुलना में रूपए के मूल्य में अब 15% से अधिक की वृद्धि हुई है और इस प्रकार अमरीकी डॉलर के आधार पर अनंतिम शुल्क का प्रावधान करना याचिकाकर्ताओं को गैर-कानूनी ढंग से 15% का अतिरिक्त शुल्क प्रदान करना है ।

110. इसके अलावा, पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश अम.डॉ. में की जाती है जबकि अन्य सीआरटी पाटनरोधी जांच में संदर्भ कीमत भारतीय रुपया है । यह रोचक है कि एक ही उत्पाद की संदर्भ कीमत एक साथ चलने वाली जांचों में अलग-अलग है । आशा है कि माननीय प्राधिकारी अपनी परंपरा में कम से कम सुसंगत होंगे चाहे वो सही हो या गलत हो और वह भी कम से कम एक समान वस्तु तथा लगभग एक साथ चलने वाली जांचों में । इसका प्रभाव यह रहा है कि अन्य जांचों में संबद्ध देशों की तुलना में इंडोनेशिया को अलाभ की स्थिति में रखा जाए यद्यपि निर्यात कीमत अधिक थी । पाटनरोधी जांच का प्रयोजन यह नहीं है कि तुलनात्मक रूप से बेहतर निर्यात कीमत वाले सहयोगी निर्यातक को अनुचित ढंग से घाटा पहुंचाया जाए ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

111. प्राधिकारी नोट करते हैं कि हितबद्ध पार्टियों द्वारा जांच अवधि के दौरान भारतीय रूपए की मूल्य में वृद्धि और उसके बाद भारतीय रूपए के मूल्य में कमी के बारे में तर्क देकर विपरीत नीति स्थापित की है । तथापि, सुस्थापित परंपरा यह है कि प्रचलित विनिमय दर पर विचार किया जाए और उसके बाद मामले के तथ्यों और परिस्थितियों के अनुसार यथोचित रूप से अम.डॉ. या भारतीय रूपए में शुल्क को व्यक्त किया जाए । अम. डॉ. के मूल्य में वृद्धि से घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत और बिक्री कीमत पर भी प्रभाव पड़ता है । अतः प्राधिकारी अम.डॉ. में मूल्य वर्गीकृत उद्ग्रहणीय शुल्क को जारी रखने की सिफारिश करते हैं जैसा कि प्रारंभिक जांच परिणामों के चरण में किया गया था ।

क्षति मार्जिन की मात्रा

112. क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षतिरहित कीमत की तुलना निर्यातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है । संबद्ध देश से निर्यातों की भारत औसत पहुंच कीमत तथा क्षति मार्जिन का आकलन निम्नानुसार किया गया है :-

क्षतिमार्जिन की गणना

पी टी एल पी डिस्प्लेज इंडोनेशिया							
कंपनी कोड	इकाई	***	***	***	***	***	***
माप		14 सीवी	20 सीवी	21 एसयूएस	21 आरएफ	21 आरएफ	21 यूएस
क्षति मार्जिन % अन्य संभवे		5-10	15-20	10-15	15-20	12-17	7-12

प्रकटन विवरण पर टिप्पणियां**घरेलू उद्योग के अनुरोध**

113. घरेलू उद्योग ने इस आधार पर पाटन मार्जिनों की समीक्षा की मांग की है कि:

- निर्यातक ने उत्पादन लागत का उचित प्रकटन किया है। उन्होंने उत्पादक के प्रकाशित वित्तीय ऋणों पर भरोसा किया है जिनके बारे में उन्होंने दावा किया है कि उन्हें विचाराधीन उत्पाद हेतु खपत की गई निविष्टि और विचाराधीन उत्पाद के संबंध में होने वाले लाभों में वित्तीय घाटा हुआ है।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियों के संदर्भ में कंपनी द्वारा कुछेक कारोबारी व्यय भी नहीं किए गए हैं और उस सीमा तक यह जांच उत्पाद विशिष्ट है न कि कंपनी विशिष्ट और इसलिए "उत्पाद" की उत्पादन लागत पर विचार किया जाना चाहिए न कि कंपनी की उत्पादन लागत पर।
- किसी संबद्ध कंपनी से आर एम की खरीद करने वाली कंपनी को उत्तरवर्ती आधार पर सौदा करने वाली कंपनी नहीं माना जा सकता।
- ऐसा प्रतीत होता है कि प्राधिकारी ने कंपनी द्वारा किए गए व्यय के आधार पर बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय तथा ब्याज संबंधी व्यय के कारण लागत का निर्धारण किया है जिसकी जांच आंतरिक नियंत्रक कंपनी द्वारा किए गए व्यय को हिसाब में लिए बिना की गई है।
- बड़े आकार के उत्पादन लागत और कुल उत्पादन के बारे में सूचना रिकार्ड में उपलब्ध प्रतीत नहीं होती है और परिशिष्ट-7, 8 और 9 क तथा 3 1 में प्रदत्त सूचना का मिलान नहीं किया जा सकता।
- ऐसा प्रतीत होता है कि आबद्ध निविष्टियों की अंतरण कीमत उत्पादन लागत एवं ऐसा आबद्ध खपत के बाजार मूल्य से काफी कम है।

- vii. उन्होंने श्रम लागत, प्रशासन व्यय, ब्याज लागत और अन्य व्यय के कारण लागत के आवंटन का तर्क भी दिया है ।
- viii. निवल निर्यात कीमत का सही निर्धारण किया गया प्रतीत नहीं होता है क्योंकि निर्यात कीमत का परिकलन संबद्ध पार्टी के सौदों के संबंध में करना होता है । उन्होंने आगे यह आरोप लगाया है कि ऋण लागत संबंधी समायोजनों पर विचार नहीं किया गया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

114. प्राधिकारी ने उपर्युक्त अनुरोधों पर विचार किया है और यह निष्कर्ष निकाला है कि ये मात्र आशंकाएं हैं और ये किसी साक्ष्य से समर्थित नहीं हैं । दूसरी ओर प्राधिकारी ने केवल पुष्टिकारी सत्यापित आंकड़ों पर ही विचार किया है और इसलिए मार्जिन का सही आकलन किया गया है ।

पी टी एल पी डिस्प्लेज, इंडोनेशिया के अनुरोध

115. निर्यातकों ने प्राधिकारी द्वारा की गई और ओ सी टी की कार्य शीट की जांच करने की मांग की और अनुरोध किया कि उन्हें ओ सी टी की विस्तृत कार्य शीट उपलब्ध कराई जाए ताकि वे अंतिम जांच परिणाम से पूर्व उस पर कारगर टिप्पणी दे सकें । उन्होंने प्रश्नावली के उत्तर की परिशिष्ट-3 में 21" के सामान्य मूल्य की पुनः जांच करने का भी अनुरोध किया है क्योंकि प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य हेतु घरेलू बाजार में कुल बिक्री का उपयोग किया है । ए 51 ई आर एस 420 एक्स तथा ए 51 क्यू डी जे 420 एक्स के सामान्य मूल्य में खासकर काफी अधिक अंतर है । उन्होंने यह भी दावा किया है कि ए 48 क्यू ए डी 220 एक्स के पाटन मार्जिन की गणना करते समय प्राधिकारी ने गणना में मामूली त्रुटि की है जिसे उनके दावानुसार बदलकर 5.43 अम.डॉ. किया जाना चाहिए । उन्होंने एन आई पी और खासकर अब तक प्रदत्त प्रभावी लाभ मार्जिन के प्रकटन की भी मांग की है ताकि वे प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क के मापदंड को सार्थक ढंग से लागू करने हेतु उस पर अपनी कारगर टिप्पणी दे सकें । उन्होंने यह भी अनुरोध किया है कि भारतीय सी आर टी उद्योग के क्षति श्रम लागत तथा वित्तीय व्यय सहित कम उत्पादकता तथा उच्च उत्पादन लागत के कारण हुई है न कि एल पी डी इंडोनेशिया के कारण ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

116. प्रकटन विवरण के उत्तर में सामान्य मूल्य तथा परिणामी पाटन मार्जिन निकालने के लिए निर्यातकों ने समायोजित उत्पादन लागत विशेष रूप से डीवीई की दरों, प्रत्येक आकार के लिए समायोजित वित्तीय व्यय, की गई ओ सी टी जांच तथा लाभकारी बिक्री के संबंध में प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए लाभानुपात हेतु विस्तृत गणना शीटों की जांच का अनुरोध किया है । यह जांच निर्यातकों के प्रतिनिधियों ने की थी और अपेक्षित ब्यौरे उपलब्ध कराए गए थे । निर्यातकों ने इस संबंध में आगे कोई टिप्पणी नहीं दी थी । जहां तक एन आई पी का संबंध है, यह घरेलू उद्योग से संबंधित एक गोपनीय सूचना है जिसका प्रकटन नहीं किया जा सकता ।

कारणात्मक संबंध के बारे में निष्कर्ष

117. उपर्युक्त जांच के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संबद्ध देश से निर्यातित संबद्ध वस्तु सामान्य मूल्य से कम कीमत पर रही है। घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत और आवेदकों की संबद्ध वस्तु की निवल बिक्री प्राप्ति से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है जिससे संबद्ध वस्तु के पाटित मूल्य में वृद्धि हुई है। क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का प्रमाण प्रस्तुत है। पाटित आयातों की मात्रा में हुई पर्याप्त वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में अत्यधिक गिरावट आई है। आगे यह देखा गया है कि संबद्ध देश से संबद्ध आयातों के बाजार हिस्से में हुई वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में आई गिरावट से घरेलू उद्योग मांग में हुई वृद्धि के अनुरूप अपनी बिक्री का बढ़ाने से वंचित हुआ है। परिणामतः जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री में उस सीमा तक वृद्धि नहीं हुई जिस सीमा तक घरेलू उद्योग अपनी सीमा का इष्टतम उपयोग कर सकता था। परिणामतः घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री तथा क्षमता उपयोग में गिरावट आई। पाटित आयातों द्वारा की गई अन्यायपूर्ण कीमत कटौती के कारण घरेलू उद्योग अपनी कीमत बढ़ाने से वंचित हुआ। जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लाभ, नकद प्रवाह और निवेश पर आय में गिरावट आई। अत्यधिक कीमत कटौती तथा पाटित आयातों की मात्रा में पर्याप्त वृद्धि होने के कारण लाभ, नकद प्रवाह तथा निवेश पर आय के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और जांच अवधि के दौरान इन मापदंडों में और अधिक गिरावट आई।

118. जांच प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि संबद्ध देश के मूल के पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की क्षति हुई है। जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई और घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

अंतिम जांच परिणाम:

119. संबद्ध पार्टियों द्वारा उठाए गए मुद्दों, प्रदान की गई सूचना और किए गए अनुरोधों तथा प्रकरण निवारण पर टिप्पणियों या उपर्युक्त जांच परिणामों में अलग-अलग टिप्पणियों सहित हितबद्ध पार्टियों के अनुरोध के जरिए प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों को ध्यान में रखते हुए और वर्तमान पाटित की क्षति की स्थिति के उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि:

- संबद्ध देश के मूल के आयात पाटित कीमतों पर हो रहे हैं और इनसे घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।
- संबद्ध देश से निर्यातित संबद्ध वस्तु घरेलू उद्योग के सामान्य मूल्य, क्षति रहित कीमत और आवेदकों की संबद्ध वस्तु की निवल बिक्री प्राप्ति से कम कीमत पर आ रही है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

- iii. संबद्ध देश से हुए संबद्ध आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि होने के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में आई गिरावट के कारण घरेलू उद्योग मांग में हुई वृद्धि के अनुरूप अपनी बिक्री को बढ़ाने से वंचित हुआ है ।
- iv. कीमत में अत्यधिक कटौती तथा पाटित आयातों की मात्रा में पर्याप्त वृद्धि होने के कारण, लाभ, नकद प्रवाह तथा निवेश पर आय के रूप में घरेलू उद्योग के निष्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है ।
- v. संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा (समग्र और मांग में हिस्से की तुलना, दोनों रूपों में) पर्याप्त वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में अत्यधिक गिरावट आई है ।

120. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क के नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन में से जो कम हो, उसके अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश करते हैं, ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त हो सके । तदनुसार संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से नीचे दी गई तालिका के कालम 9 में उल्लिखित राशि और पहुंच मूल्य के बीच अंतर के बराबर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की जाती है ।

क्र. सं.	उप-शीर्ष	वस्तु विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	इंचों में विनिर्देशन	राशि	इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	854011	रंगीन टेलीविजन पिकचर ट्यूब	इंडोनेशिया	इंडोनेशिया	पीटी एलपी डिस्ट्रेज इंडोनेशिया	पीटी एलपी डिस्ट्रेज इंडोनेशिया	14"	21.76	प्रति नग	अम.डॉ.
2.	-वही-	-वही-	इंडोनेशिया	इंडोनेशिया	अन्य कोई	अन्य कोई	14"	21.76	प्रति नग	अम.डॉ.
3.	-वही-	-वही-	कोरिया गण., चीन, जन. गण., मलेशिया तथा थाइलैंड से इतर कोई	इंडोनेशिया	कोई	कोई	14"	21.76	प्रति नग	अम.डॉ.
4.	-वही-	-वही-	इंडोनेशिया	कोरिया गण., चीन, जन. गण., मलेशिया तथा थाइलैंड से इतर कोई	कोई	कोई	14"	21.76	प्रति नग	अम.डॉ.
5.	-वही-	-वही-	इंडोनेशिया	इंडोनेशिया	पीटी एलपी डिस्ट्रेज इंडोनेशिया	पीटी एलपी डिस्ट्रेज इंडोनेशिया	20"	32.16	प्रति नग	अम.डॉ.
6.	-वही-	-वही-	इंडोनेशिया	इंडोनेशिया	अन्य कोई	अन्य कोई	20"	32.16	प्रति नग.	अम.डॉ.
7.	-वही-	-वही-	कोरिया गण., चीन, जन. गण., मलेशिया तथा थाइलैंड से इतर कोई	इंडोनेशिया	कोई	कोई	20"	32.16	प्रति नग	अम.डॉ.

121. उपर्युक्त के अधीन प्राधिकारी 30 दिसंबर, 2008 की अनंतिम जांच परिणाम संबंधी अधिसूचना सं. 14/15/2008-डीजीएडी तथा 2 जनवरी, 2009 की संशोधनकारी अधिसूचना की पुष्टि करते हैं और अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की तारीख से उपर्युक्त पैरा 120 और उपर्युक्त शुल्क तालिका में उल्लिखित पाटनरोधी शुल्क लागू करने की सिफारिश करते हैं ।

122. इस सिफारिश के परिणामस्वरूप केन्द्र सरकार के आदेशों के खिलाफ कोई अपील उक्त अधिनियम के संगत उपबंधों के अनुसार, सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क तथा सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी ।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 10th September, 2009

FINAL FINDINGS

Subject : Anti-Dumping Investigation concerning imports of Cathode Ray Colour Picture Tubes originating in or exported from Indonesia.

No. 14/15/2008-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Duty or Additional Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as Rules);

Procedure

2. The procedure described below has been followed with regard to this investigation by the Authority.
 - i) On 15th September 2008, the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority) issued an initiation Notification, duly notifying the same in the Gazette of India, thereby initiating an Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods originating in or exported from Indonesia (hereinafter referred to as subject country)
 - ii) The Anti-dumping proceedings were initiated following an application received from M/s Samtel Color Limited supported by M/S JCT Electronics Limited, (hereinafter referred to as the applicants) in respect of complete or incomplete cathode ray colour television picture tubes (hereinafter referred to as CPT) originating in or exported from Indonesia, representing a major proportion of the domestic production of the said product. The application contained sufficient evidence of dumping of the said product from the subject country, and material injury resulting there from, which was considered sufficient to justify the initiation of the proceedings.
 - iii) The Authority notified the Embassy of subject country in India about the receipt of dumping application made by the applicants before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;

- iv) The Authority sent copies of initiation notification dated 15th September, 2008, to the Embassy of the subject country in India, known exporters from the subject country, importers and the domestic industry as per the addresses made available by the applicants and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.
- v) The Authority provided copies of the non-confidential version of the application to the known exporters and to the embassy of Indonesia in accordance with Rule 6 supra.
- vi) The Embassy of Indonesia in India was informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6 with a request to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letters and questionnaire sent to the exporter/producer was also sent to them, along with the names and addresses of the exporter.

The Authority provided copies of the non-confidential version of the application to the known exporter and to the Embassy of Indonesia in accordance with Rule 6 supra.

- vii) The Authority sent questionnaire, to elicit relevant information to the following known exporter in subject country in accordance with Rule 6(4);

PT LG Electronics Indonesia
Kawasan Industri MM 2100 Blok G Cibitung ,Bekasi Bekasi 11111

- ix) Following exporter/producer has responded to the exporter's questionnaire in a substantial manner and notice of initiation. The exporter requested for extension of time for submission of response which was granted to them.

PT LP Displays Indonesia
Kawasan Industri MM 2100 Blok G Cikarang Barat-Bekasi 17520

- x) Questionnaires were sent to following known importers and users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4).

a) Dixon Utilities & Exports Limited
B-14, Phase – II, Noida – 201305 (U.P.)

b) LG Electronics India Pvt. Ltd.
Plot No. 51, Udyog Vihar, Surajpur-Kasna Road, Greater Noida. (U.P.)

c) Panasonic Avc Networks India Co. Ltd.
C-52, Phase – I, Noida – 201305 (U.P.)

d) Mirc Electronics Limited
Onida House, G-1, Midc,

Mahakali Caves Road, Andheri (East) Mumbai – 400093

e) Samsung India Electronics Pvt. Ltd.
B-1, Sector-81, Phase – II, Noida – 201305 (U.P.)

f) Videocon International Ltd.
14 Kms. Stone, Aurangabad-Paithan Road, Chitegaon,
Tq. Paithan, Dist. Aurangabad - 431105

g) Philips Electronics India Ltd.
Plot 80, Bhosari Industrial Estate, P.B.12, Pune – 411026

xi) In response to the above notification, M/s CEAMA and LG Electronic India Ltd requested for extension of time for submission of their response which was granted till 30.11.2008. From amongst importers, Mirc Electronics Ltd and Panasonic AVC Networks India Co. Ltd have filed their responses. However, no response was received from LG Electronics India Ltd.

xii) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years and for the period of investigations.

xiii) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.

xiv) Optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if anti dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry. For the purpose, domestic industry was directed to provide its cost of production duly certified by a practicing cost accountant.

xv) *** in this Notification represents information furnished by the applicant on confidential basis and so considered by Authority under the Rules;

xvi) The Period of Investigation for the purpose of the present investigation is 1st July, 2007 to 30th June, 2008 (12 months). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from 1st April 2005 to the end of the POI.

xvii) The Authority provided opportunity to the Domestic industry/ exporters/ importers/ industrial users of the product under consideration by way of a public hearing on 17.03.2009 to present their views subsequently supported by written submissions and to furnish information considered relevant to the investigation.

xviii) The Authority issued Disclosure statement on 20th August 2009, thereby giving the essential facts under consideration which form the basis of its decision in the final

findings. The replies received thereto have been taken into consideration, without repetition in the present finding.

xix) The Authority satisfied itself with regard to accuracy of the information provided by the interested parties to the extent considered necessary.

Product Under Consideration and Like Article

3. The product under consideration is “complete or incomplete cathode ray colour television picture tubes”, more elaborately described as “thermionic, cold cathode or photo cathode valves and tubes such as vacuum or vapor or gas filled valves and tubes, mercury arc rectifying valves and tubes, also called cathode ray tubes, television camera tubes or cathode ray colour television picture tubes, or colour television picture tubes, or colour picture tubes etc.” and has been referred to as colour picture tubes or “CPT” or “CRT” in this notification. Video and computer monitor cathode ray tubes are beyond the scope of the present petition.

4. The subject goods fall under Chapter 85 of the Custom Tariff Act, 1975 under subheading no. 8540.11. The customs classification is indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.

View of the domestic industry

5. The applicants have claimed that goods produced by them are like article to the goods originating in or exported from Indonesia. The imported product is also used by same category of consumers. The product contains the same basic technical properties and has the same functions & uses.

Examination By the Authority

6. There are no issues raised contrary to the submissions made by the domestic industry on the Product under consideration. In view of the above, the Designated Authority confirms the preliminary findings regarding the Product under consideration.

Domestic Industry

Views Of the Domestic Industry

7. Rule 2(b) defines domestic industry as under:-

(b) “Domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporter or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers shall be deemed not to form part of domestic industry:

8. The application has been filed by Samtel Color Limited. The petitioner has provided information relevant to the present investigations. The subject goods are also produced by JCT, Hotline and BPL Display Devices Limited. M/s Hotline and BPL discontinued their production during the last quarter of POI.

Examination by the Authority

9. After detailed investigations, the Authority notes that (a) production of the Samtel Color Limited constitutes a major proportion in Indian production (b) Production of the petitioner constitutes more than 50% of Indian production (c) the application has been supported by more than 50% of Indian production, (d) the application was made by or on behalf of the domestic industry. Further, Samtel Color Limited constitutes domestic industry within the meaning of the rule 2(b) read with 2(d) for the purpose of the present findings.

Views of the exporter, importers, consumers and other interested parties.

10. Hotlines and BPL should have been included within the purview of DI as they discontinued production only in the last quarter of the POI, but had their presence in the major portion of POI. The third producer JCT Electronics has been considered as a part of the domestic industry by the same Authority undergoing another investigation for the same product for alleged dumping from China, Korea, Thailand and Malaysia.

Examination By the Authority

11. M/s Hotline and BPL have not provided injury information. The Authority is therefore unable to include their data. Moreover, there is no information on record that Hotline and BPL have not suffered injury. As regards JCT, the Authority noted in the previous case that JCT has suffered higher degree of injury. The information provided by JCT in the present investigation also shows that JCT has suffered injury. However, since the information is not complete in the form and manner desired, the Authority has not included JCT within the scope of the domestic industry. There are no issues raised contrary to the submissions made by the domestic industry on the standing. In view of the above the Designated Authority confirms the preliminary finding on issue of standing and scope of the domestic industry.

Initiation Of the Investigation

Views of the Domestic Industry

12. The Domestic Industry has made no submissions on this aspect of investigation.

Views of the exporter, importers, consumers and other interested parties.

LPD Indonesia, Onida and Mirc Electronics

13. It has been submitted that the initiation is in violation of Rule 5-Sub-Rule 3(b). Referring to para 3 of provisional findings, it is claimed that from the information as

available in the application of the domestic industry and the Provisional Findings it appears that the initiation itself was in violation of the provisions Rule 5 sub-rule 3(b) of the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Ant-Dumping Duty on Dumped Articles and For Determination of Injury) Rules, 1995. It has been pleaded that when the POI 1st July 2007 to 30th June 2008 is the financial year of the domestic industry, then why the analysis in respect of year 2007-08 has been considered separately.

14. The period of investigation as notified by the Authority is from '1st July, 2007 to 30th June, 2008', which is also the financial year of the domestic industry. The financial year immediately preceding the POI as considered for injury analysis in the Provisional Findings is 2007-08. When the POI itself is the financial year 2007-08, on what ground the DA has considered it as a separate year for injury analysis? The data provided under 2007-08 and the POI in the Performa IVA are different although both the two periods being same. Would you please explain the period, injury data of which has been considered for 2007-08? The data considered in column for 2007-08 in the injury analysis do not reflect the data of the financial year 2007-08 and hence the whole investigation is based on erroneous/fraudulent data. The initiation is violative of Rule 5 sub-rule 3(b) of the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Ant-Dumping Duty on Dumped Articles and For Determination of Injury) Rules, 1995 as accuracy of evidence was absent. Similarly, the injury analysis as recorded in the Provisional Findings is based on such erroneous consideration. Hence it is requested that the investigation be terminated immediately and a fresh investigation may be initiated, if warranted, based on a fully and properly documented petition.

Period of Investigation and Injury Period

Submissions made by LPD Indonesia, Onida and Mirc Electronics

15. As per past practice of DGAD, an application for initiation of Anti Dumping investigation should contain information about the state of affairs of the Domestic Industry and imports for the period of investigation and the past three years. The same has been termed as injury period. In the present investigation the Designated Authority has opted period of investigation as July 2007 to June 2008 and the period of examination of trends in the context of injury analysis has been taken from 1st April 2005 to the end of POI. This means the injury period has been considered as POI plus two preceding years. Under these circumstances the Domestic Industry should have filed information for 2004-05, 2005-06, 2006-07 and the POI. The Domestic Industry has deliberately furnished information for 2005-06, 2006-07, 2007-08 and POI. Interestingly, the POI is the same as 2007-08 and hence 2007-08 may not be considered as a separate period. While the data for 2004-05 has already been furnished to the Authority in the other ongoing investigation for the same product as mentioned above, there is no reason to exclude such information in the present investigation. The reason for deviating from its own established practice by the DGAD could not be understood.

Examination By the Authority

16. The Authority has examined the issues raised above. It is seen that the POI is from 01 July 2007 to 30th June 2008 whereas the data for the year 2007-08 is for the period 01 April 2007 to 31st March 2008. The period of investigation is not the financial year. The period of investigation and financial year being different, the present analysis is consistent with the trade notice issued by the Authority on this issue. In respect of the contention that there is an overlap in the period between the investigation period and the preceding year, the Authority refers to its trade notice earlier issued which clearly provides that there should be no gap in the injury period. More so, when the injury examination has been carried out over a much longer period and the conclusion on injury is not based on a strict comparison between period of investigation and the preceding year, the issue as to how the injury findings have got distorted because of an overlap in the period of investigation and preceding year have not been brought out by the interested parties. The authority therefore upholds the preliminary determination in this regard and holds that there is no ambiguity and inconsistency so far as the selection of Period of Investigation and analysis of injury period is concerned.

Confidentiality**Views of the exporter, importers, consumers and other interested parties.****LPD Indonesia, Onida and Mirc Electronics**

17. It has been pleaded that Authority has claimed confidentiality when the concerned party claimed the Data as Non-Confidential. In this context they have referred to the Provisional Findings, under various injury data analysis, claiming excessive use of *** which indicated that the data provider has given them on confidential basis. However, while referred the same with the non-confidential submission of the domestic industry, it has been observed that they have not claimed the same as Confidential. In this context they have also referred to Para 30 of the preliminary findings where the Authority has noted some information of production, capacity, sales volume and capacity utilization. The absolute data have been given as *** meaning thereby that these are confidential data. The Table also includes indexed information. In Performa IVA regarding injury information, the applicant domestic industry has submitted the absolute data as non-confidential. In such a situation where the DI has claimed the data as non-confidential, how the DA can consider these as confidential is not amenable to us. This is nothing but an attempt to cover up any deficiencies in data, which the DA has considered but is not willing to disclose.

18. The data provided by the domestic industry and the one considered by the DA are quite contradictory. It has been pleaded that the few ratios disclosed by the Petitioner at the Hearing in the paper book are in response to the far more extensive and detailed NCV Ratio Disclosure by the exporter and the importer. The Domestic Industry should also be required to provide similar Disclosure. LPD-I also refers to the prior Investigations in which it filed the Public Petition of Community Industry in 2006 EU Investigations and Findings by EC to demonstrate the differences in the public disclosure standards required of the Petitioners and Authorities in other jurisdictions when compared to India. It is to be

hoped that Hon'ble Authority will be more rigorous and even handed in future in its requirement of NCV Disclosure by the Petitioners and improve its own Disclosure standards.

Examination by the Authority

19. The Authority has considered the arguments of interested parties with regard to confidentiality of information and provided indexed information to the extent possible, wherever information has been claimed confidential. The information in respect of import volumes and market share etc. has been disclosed while issuing the disclosure statement. The Authority notes that the submissions that the data provided by DI and one considered by the Authority is different is not supported by any specific nos. as to which are being referred to while making this submission. On the face of it, it is a mere statement, not based upon facts, and not supported by any evidence on record. Regarding capacity, capacity utilisation etc. it is the practice of the Authority that when the details are based upon a single company data, the same is not made available in public domain. In any case if the data has already been provided by the DI in their NCV to exporters, there is no reason for the responding exporter to raise the issue on this score. The Authority notes that it would have been prudent for the responding exporter to bring out any inconsistency in the indexed data provided in the PF document vis-à-vis one made available by the DI in NCV as claimed by them. No inconsistency on this score has been brought out and nothing on record has been made available in the comments to the disclosure statement. The Authority has followed the consistent practice as is being followed in all other cases across the board.

20 Normal Value, export Price and Dumping Margin Normal Value for PT LP Displays Indonesia:

21. M/s PT LP Displays, Indonesia, the exporter from Indonesia responded as per the requirements of the exporters' questionnaire. Certain queries on these submissions were communicated to the exporter. For arriving at the Normal value, the domestic sales price of corresponding sizes of the company (after adjusting for credit costs claimed) was subjected to the ordinary course of trade test (OCT) by comparing with the respective cost of production. The respective cost of production has been adjusted for the allocations in respect of the cost of DY and financial expenses. Based on above, the allocations to each size have been worked out which have been adopted for the purpose of carrying out the OCT test. On this basis, the normal value has been arrived at in respect of the sizes exported. Of the three sizes exported to India, normal value in respect of size 14 and 20 has been based on cost plus reasonable profit and different variants of size 21 have been based on total sales in the domestic market. In response to the disclosure statement, the exporters requested to examine the detailed calculation sheets for adjusted cost of production especially the components of the rates of DY, financial expenses adjusted for each size, the details of OCT test carried out and the profit ratio adopted by the authority in respect of the profitable sales for working out the Normal value and the resultant dumping margin. The examination was carried out by the

representative of the exporters and required details were provided. No further comments were provided by the exporters in this regard.

22. The normal value adopted in respect of M/s PT LP Displays Indonesia (the cooperating exporter) has been adopted for the residual category as well.

Export Price:

23 The verification of records of the responding exporter was carried out at their premises on 7th and 8th of April 2009. The export transactions were checked from the records of the exporter. The terms of sales for the transactions to India were found to be on both CNF and FOB basis, with post FOB expenses borne by the Indian Importers. Adjustments claimed on account of Inland Freight, Handling Charges, Overseas Freight (in case of CNF transactions only), Credit Cost and bank Charges were verified from the respective records and found to be in order as claimed. No adjustments had been claimed on account of packing charges and inland insurance. Since such adjustments apply to the domestic sales as well and no adjustments on account of these expenses having been claimed for domestic sales, therefore, no adjustments on this account have been allowed in the export price comparison as well.

24 The lowest export price in respect of the cooperating exporter has been considered for determination of the net export price in respect of the residual category after allowing adjustments at par with those allowed for the cooperating exporter. This lowest export price has been determined based upon a reasonable commercial volume for each variant.

DUMPING MARGIN

25. The Authority has determined both the normal value and export price at ex-factory level, separately for each size. Cumulative dumping margin has been determined considering the associated volumes. Thus, the Authority considers that the comparison made constitutes a fair comparison. Considering the normal value and export price determined as detailed above, dumping margin has been determined, which comes as under:-

PT LP Displays Indonesia							
Company Code	***	***	***	***	***	***	Total
Size	***	***	***	***	***	***	
Quantity (Pcs.)	***	***	***	***	***	***	
Normal Value (US\$)	***	***	***	***	***	***	
Net Export Price (US\$)	***	***	***	***	***	***	
Dumping Margin (US\$)	***	***	***	***	***	***	
DM%	35-40	20-25	3-8	2-7	Negative	3-8	2-7
All Others	36.00	23.35	10.53	33.53	0.45	8	27-32

26 Methodology For Injury Determination and Examination of Causal Link
Views of the domestic industry

27. The followings are the views of domestic industry:-

- (a) Foreign producers kept reducing their prices consistently over the injury period;
- (b) Indonesian producer joined other foreign producers, by offering prices lower than the prices prevailing at the time of previous investigation POI;
- (c) The domestic industry has been forced to reduce its prices consistently throughout the injury period;
- (d) Even though imports from Indonesia have started only recently, the same were significant during the proposed POI;
- (e) Imports are significantly depressing the prices of the domestic industry in the domestic market;
- (f) As a result of significant price depression, contribution margin steeply declined;
- (g) As a result of price depression and resultant decline in contribution, situation of the domestic industry with regard to profit, return on investments and cash flow has significantly deteriorated. The domestic industry suffered huge financial losses and negative return on investment;
- (h) A serious impact has been the impact of the dumping that the overall financial situation of the Company has significantly deteriorated;
- (i) Imports have increased in absolute terms as also related to production and consumption in India;
- (j) Even though production of the domestic industry increased up to 2006-07, the market share has declined in proposed POI;
- (k) Even though the sales volumes of the domestic industry have increased, the increase is far lower than the increase in demand, even when the domestic industry is saddled with unutilized capacities;
- (l) The utilization of the domestic industry has declined;
- (m) Market share of domestic industry increased till 2006-07, but declined very significantly thereafter with significant increase in imports in that period.

It has thus been pleaded that the performance of the domestic industry has declined over the injury period and the dumped imports of subject goods are causing material injury to the domestic industry. The deterioration in the performance of the domestic industry during the current period is quite significant and material.

Considering various injury parameters, it has been claimed by the domestic industry that the performance of the domestic industry has declined over the injury period and the dumped imports of subject goods are causing severe material injury to the domestic industry. The deterioration in the performance during the current period has been claimed to be quite significant and material. Increase in imports is stated to have led to increase in market share of imports. As a direct consequence, market share of domestic industry, it has been claimed, could not increase as a result of increase in demand. On the contrary, the market share of the domestic industry is claimed to have declined significantly in the POI. Further, significant decline in the market share in the proposed POI is claimed to have led to significant under utilization of production capacities. Decline in import price is claimed to have forced the domestic industry to reduce the prices which in turn led to significant erosion in profit margin and consequent deterioration in profit/loss, return on investments and cash flow.

Views of other interested parties**LPD Indonesia, Onida and Mirc Electronics**

30. The present Anti dumping investigation has been initiated on 15th September, 2008 consequent upon an application made by Samtel Color Limited as the domestic industry. It has been stated at Para 9 of the Preliminary findings that there were three more producers of the subject goods in India. JCT Electronics is in the production of the subject goods. As stated in the preliminary findings, Hotlines and BPL have discontinued production in the last quarter of the POI. Since these two producers were in production during the major part of the POI, there is no justification to exclude them from the Domestic Industry. The Authority could easily take a POI excluding the last quarter so that a proper analysis to the domestic industry as a whole could be done for the sake of a fair investigation.

31. The same Authority has been also undergoing another investigation for the same product for alleged dumping from China, Korea, Thailand and Malaysia. For that investigation another domestic producer JCT Electronics was a part of the domestic industry. While the injury data of the said producers were available with the Authority, what constrained the Authority to exclude that producer from the domestic industry could not be understood. Such discriminative treatment is bad at law for an independent and fair investigative Authority and need be corrected. The Designated Authority needs to direct all the domestic producers to assist the authority with relevant data for a fair investigation. The data considered in the investigation is only a small segment of the domestic industry and are inadequate to consider them as information of the domestic industry.

32. It is quite natural that the petitioner would blame imports as the reason for injury to them. To substantiate their claim they have exaggerated their claim by data submitted in confidential, which are not approachable to other interested parties. They are conservative enough to even provide any indexed data of cost, sales or profitability. In the absence of the same, the other interested parties are handicapped to provide any meaningful views. The Designated Authority has recorded at Para 19 that no views have been given by any interested party other than the domestic industry. The DA should appreciate that the petitioners have not provided sufficient and accurate data in the non-confidential application so that other interested parties can comment upon. It is interesting to note that the data, which the petitioner did not claim to be confidential, the DA has claimed them as confidential in the preliminary findings as cited in an earlier paragraph. The petitioners have given certain information about its capacity, production, domestic-sales, export sales etc in the non-confidential application although some of them are inaccurate and ill-motivated to misguide the Authority.

Examination by the Authority

33. Article 3.1 of the ADA and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products, with regard to the volume effect of the dumped imports. The Authority is required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production

or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

34. For the purpose of injury analysis the Authority has cumulatively examined effect of dumped imports of the subject goods on the domestic industry and its effect on production, capacity utilization, sales, prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any. With regard to analysis of data of JCT already on record, the Authority notes that the available data on record did not correspond to the POI of the present investigation and reliance on this incomplete data would lead to distortions. The onus is on the producer / manufacturer to opt for participation or otherwise in an AD investigation. M/s JCT merely supported the petition and sought not to be a part of investigation. The injury analysis is based upon the data of M/s Samtel only; the DI in the present case within the scope of AD Rules. Regarding the allegation that petitioners have not provided sufficient and accurate data is again a mere statement, not supported by any factual evidence. The Authority notes that it has taken on board only the verified data. On the issue of capacity, capacity utilisation etc. the same have already been explained in Para 19 above.

35. Since positive dumping margins have been established for the exports from the subject country, therefore, entire exports from the subject country have been treated as dumped imports for the purpose of injury analysis and causal link examination.

Volume Effect:

Views of LPD Indonesia, Onida and Mirc Electronics

36. It has been pleaded that the assessment of the DA is based on a casual approach. According to them the Authority has come out with the Preliminary Findings on the 30th December, 2008. It had failed to collect correct import data for the quarter ended 30th June 2008 from the DGCI & S, the dependable Government Source of import data. If the export quantity of the responding exporter represents the total imports from Indonesia there may be no reason for consideration of any residual category of exporters from that country and the Duty Table should have been revised accordingly. If the DA feels that there were other exporters from Indonesia and residual duties require to be notified the export data of the responding exporter should not have been considered as the total imports from that country. There was no justification for a hurriedly notified preliminary finding, where adequate and accurate data of imports were not available. The claim of adequate and accurate data of the DA is not warranted by the fact of the findings. It has also been submitted that where there were no residual exporters, the DA has notified anti-dumping duty for residual exporters also and such act cannot be considered justified. The Approach of the DA is ad-hoc and casual in nature. He should have waited for some time more to collect correct data of imports and notify the preliminary findings thereafter.

Examination by the Authority

37. The Authority has procured transaction wise imports information from the DGCI&S. Information provided by the responding exporter, importers/ consumers, DGCI&S information and information in the petition was correlated and the position is as follows –

Particulars	POI
As per exporter's response from Indonesia.	695035
As per importers' response.	
Mirc India	***
Panasonic	***
Total as per importers' responses	***
As per petition	389010

38 The Authority notes that the actual volume of imports reported by the responding exporter is far more than the volume of imports reported in the statistics made available by either the importers or the petitioner. The information provided by DGC&IS is also for the financial year 2007-08, without the import figures for the period April to June 2008, which is a part of POI, hence not comparable. The Authority has therefore considered the volume of imports as reported by the responding exporter for carrying out volume analysis. As regards Duty notified for residual category based upon responding exporter's data, the Authority has followed this practice consistently in all investigations and there is no deviation from this practice. The Authority further notes that residual category duty has been imposed in absence of a certification from authentic sources that there are no other producers of subject goods in the subject country, or no further plants are coming up during the course of ADD in place. The Authority notes that if there are no other producers, as claimed, residual duty should have no impact on importers.

Import volumes and Share of subject country

39. The volume of dumped imports of subject product from subject country is given in the table below.

Particulars	2005-06	2006-07	2007-08	July 07 to June 08
Import volumes (in '000 pcs)				
Subject country	8.62	30.51	211.91	695.04
Other countries	2,329.38	3,298.50	7,022.23	6,882.97
Total Imports	2,338.00	3,329.01	7,234.14	7,578.00
Market Share in Imports (%)				
Subject country	0.37	0.92	2.93	9.17
Other Countries	99.61	99.06	97.07	90.83
Production	5,425	6,678	6,541	6,384
Subject Import in relation to Production	0.16	0.46	3.24	10.89

40. The Authority holds that imports from subject country increased significantly over the period in absolute terms, in relation to imports into India and in relation to production in India. At the same time, imports from other countries declined.

The Import volumes and Share of subject country
Views of LPD Indonesia, Onida and Mirc Electronics

41. The Table of imports statistics as given under Para 25 of the Preliminary Findings is incomplete, inadequate, inaccurate and misleading. The DA has claimed excessive confidentiality in providing data of import volumes and share of the subject country. The DA should appreciate that it did not have accurate and adequate import data from the subject country and therefore should have withheld the preliminary findings for the time being and wait for correct DGCI & S data which he could disclose and come out with a proper finding. Even the DA has marked all such data as ****, a prudent mathematician can easily work out the data to the nearest estimates from different Tables incorporated in the Findings. Moreover many of such data has not even been claimed as confidential by the domestic industry.

Examination by the Authority

42. The Authority has considered the volume of imports as reported by the responding exporter for carrying out volume analysis and disclosed the same in the Disclosure statement. Petitioner has defined, for the purpose of the present petition, demand or consumption of the product in the Country as the sum of domestic sales of the domestic producers and imports from all sources. It would be seen that demand of the product in the country shows positive growth in the current period.

	In 000 pcs			
	2005-06	2006-07	2007-08	July 07 to June 08
Demand in India	10,671	12,481	16,728	17,432
Sales of domestic industry	***	***	***	***
Trends	100	149	157	161
Sales of other Indian producers	***	***	***	***
Trends	100	78	79	83
Imports from subject country	9	31	212	695
Trends	100	344	2356	7722
Other country imports	2329	3298	7,022	6,883
Trends	100	142	302	296
Total Imports in India	2338	3329	7,234	7,578
Trends	100	142	309	324
Market Share %				
Domestic industry	***	***	***	***
Indexed	42.94	28.65	21.54	21.84
Other Indian producers	***	***	***	***
Indexed	21.83	26.43	41.98	39.48

<input type="checkbox"/> Subject country	***	***	***	***
	***	***	***	***
Other countries	***	***	***	***
Indexed	100	149	157	161
Total share of Domestic Producers	***	***	***	***
Indexed	100	78	79	83

43. The Sales of other Indian producers includes made by M/s JCT (3282) and M/s BPL (526) 000 pcs during the POI. The Authority notes that demand for the subject goods had been growing from base year to POI. It grew by about 63% over injury period. As noted in the Preliminary Findings, market of domestic industry increased between 2005-06 and 2006-07 and thereafter declined significantly. Further, market share of other Indian producers also declined consistently. The authority notes in this regard that it is not appropriate to compare period of investigation with immediately preceding year. The development of performance of the domestic industry throughout the injury period must be considered.

44. The Authority concludes that the market share of dumped imports increased significantly over the relevant period, resulting in decline in the market share of the Indian industry, thereby showing adverse volume effect.

Capacity, Production, Demand, Sales, Capacity Utilisation
Views of LPD Indonesia, Onida and Mirc Electronics

45. At Para 27 of the Provisional Findings, demand or consumption of the product in the Country has been defined as the sum of domestic sales of the domestic producers and imports from all sources. The Table given there under gave the data of demands for the injury period in absolute numbers and other information like Market Share have been given in the form of index numbers. From the indexed information, the data of imports, domestic sale of domestic industry/producers etc have worked out and placed below for perusal/ interpretation.

46. From the above Table it may be seen that the demand for the subject goods have been increased by about 63% during the proposed injury period and the domestic sales of the domestic industry has gone up by 62% showing almost similar growth. Hence there is no adverse volume effect to the domestic industry.

47. The assessment of the DA in this regard does not show proper application of mind also as the domestic industry has misled the authority with inaccurate data which the DA has considered without verification of the data already available with him. In the present investigation Samtel Color Ltd is the only domestic industry. As per the published annual reports of the company, the capacity to produce the subject goods during 2005-06 was 5600000 pieces in three production lines. Two more lines were added in 2006-07 and therefore capacity was increased to 9400000 pieces from 2006-07 onwards till POI. However the DI has claimed it to be 6500000 pieces in 2005-06, 9050000 pieces in 2006-07 and 10200000 pieces each in 2007-08 onwards. The capacity utilizations were

computed based on these inaccurate data. The DA has failed to rectify the data before use in the findings.

Examination by the Authority

48. The issue raised as above has been examined by the Authority and the position is as follows:

In 000 Pcs

Particulars	2005-06	2006-07	2007-08	July 07 to June08
Capacity	6500	9050	10200	10200
Indexed	100	139	157	157
Production	***	***	***	***
Indexed	100	123	121	118
Capacity utilization%	***	***	***	***
Indexed	100	88	77	75
Sales *	***	***	***	***
Indexed	100	126	120	119
Demand	10,671	12,481	16,728	17,432

*Sales include Domestic and Exports for M/s Samtel.

49. In respect of Capacity, Line IV was capitalized on 1st July 2006 and Line V on 1st August 2006. The total capacities for these lines were 12 and 25 lac pcs per annum. To arrive at the available capacity, the authority added capacity of 0.90 lac pcs for line IV and 16.7 lac pcs for line V for the period 2006-07. This became 9050 lac pcs. However, for the period 2007-08, since full capacity was available, total capacity was added (12+25 lac pcs.) to the original capacity of 65 lac pcs to arrive at the available capacity of 102 lac pcs. The Authority notes that capacity, production and sales volumes of the domestic industry increased in response to increase in demand. While the capacity increased by *** lac pieces, production increased only by *** lac pieces, even though demand increased by *** lac pieces. Domestic industry faced decline in capacity utilization in spite of existing demand in the Country. In this context, the authority has adopted verified information.

Price effect of the dumped imports on the Domestic Industry **Views of LPD Indonesia, Onida and Mirc Electronics**

50. The price of an article is a function of many factors. It is not only the competitor's price which affects the DP's price, the quality, change of technology, customers' choice, cost of production, obsolescence etc. In the electronic market, it is more apparent and changes are taking place very fast. Manufacturers are very fast in changing models, look, features etc to the improved need of the prospective customers. The domestic producers need to adjust it self with the changes taking place in other parts of the world, it wants to remain in the market. Whenever new improved goods are coming, the customers move to new one. So the price for the old models falls. If the domestic industry fails to adjust

with the newer needs of the consumers, they should not be allowed to blame imports for their injury, if any. As per their own submission, two domestic manufacturers stopped production during the POI. The DA has not investigated the reason for their closure. It is most likely that they themselves may have started importing the subject goods for being superior in quality. No findings in this regard are available in the Provisional findings.

51. It has been seen in the other ongoing investigation of the same product that Samtel Color Limited, as per their own Chairman's confession, has been suffering from cost overrun and failure to stabilize the new production lines 4 and 5. The company was burdened with heavy finance cost requiring financial reconstruction. Such being the situation, the company is bound to suffer with a higher cost of production followed by a higher Non-injurious price. Such Non-injurious price is bound to be very high to generate higher injury margin. The DA should have adjusted all the abnormalities in cost and capacity utilizations while determining a fair cost of production and non-injurious price. But in the findings any such judicious consideration of the DA is missing.

52. From the data of production as have been given in the petition, the domestic industry has not yet stabilized its production in Line 4 and Line 6. In 2005-06 when it had only 3 lines of operation it could produce 63 Lac CPTs. But after adding two more lines its production increased to 65 Lac CPTs. The company could not complete its capital restructuring for which it had been suffering from liquidity problems also. These are certain causes of self-inflicted injury. However, DA has failed to consider these. The findings of the DA simply confirm the view that the DA sees with one eye only with a preconceived notion of linking any injury of the domestic industry to imports. The records of the prior investigation may be referred to in this respect.

53. Average selling price reduction is commensurate with reduction in raw material cost. Any decrease in profitability is attributable to inability of the company to stabilize the new production lines and liquidity problem coupled with high interest cost and depreciation.

54. The domestic industry has not given any non-confidential version of its costing information. The Annual report of the company for the POI has also not been provided. In the absence of such information we are handicapped to provide any further input for a fair investigation. In the absence of information of the net sales realization of the domestic industry we cannot offer any comment on price undercutting. As regards this, the observation of the DA seems to be the replica of the DI's claim, which is an exaggerated one.

Examination by the Authority

55. The Authority notes that the information on record does not show that imports were necessitated due to fresh needs of the consumers. The issue of cost overrun and establishment of new production lines have already been examined in detail in the previous investigation and taken into account in this investigation as well. Information with regard to costing information and Net Sales Realization claimed confidential by the domestic industry and considered so by the authority are not susceptible for summarization. Under the scheme of the rules, interested parties are required to provide

relevant information and thereafter the Designated Authority is required to come to its own independent conclusion and that is how exactly the Authority has drawn an independent conclusion. The domestic industry may allege that the Authority has allowed dumping to take place as claimed, which is actually the case here. However the claim is based upon the actual data verification carried out by the Authority. The Authority therefore cannot be accused of replicating what has been claimed either by DI or the responding exporter as the summarization as above is based upon the verified data of both domestic industry as well as the responding exporter. The Authority however notes that Onida being one of the consumers should be very well aware of the prices charged by domestic industry and imports. To such an extent Onida should have been aware of the extent of price difference.

Other Injury Parameters

Views of UPD Indonesia, Onida and Mirc Electronics

48. Other injury parameters are simply the result of the price and volume effect. With the negative effect of the two, all other parameters simply show the similar trend. However the data provided in respect of the same are incorrect and exaggerated ones. We reserve the right to supplement our observations as and when we will be able to gather more relevant information in this regard.

49. The Domestic Industry is facing a lot of internal problems and international competitiveness. It suffers higher cost of production. It is engaged in only conventional CRT, whereas consumer demand has shifted to more technologically advanced products. Hence the reason of injury is not dumping. Thus the causal link should be revisited.

50. The performance of the domestic industry in the international market should have been considered.

51. The data submitted in the petition and the data considered in the provisional findings are inconsistent and contradictory and are at variance with similar data as per their actual accounts.

52. Most CRT producers have shut down during the injury period across the globe and survivors have made losses and have reduced capacities. The inventories of the existing producers led globally to reduce CRT Prices during the injury period; hence the phenomenon is not limited to India.

53. Adjustment must also be made since these are separate investigations with separate POI for injury attributable to Indonesia and injury attributable to dumping by other countries in the prior investigations. They cannot be clubbed together. For this reason too there can be no retrospective duty. Hence the injury attributable to other countries as per the final findings in those investigations must be different from the injury attributable to Indonesia.

62. Samtel would be the preferred supplier due its location as it is in 14" and 15" where imports take place only due to its inability to meet domestic demand. If it could rectify its quality problems in respect of 21"-29" especially flat and slim versions. However, it consistently constantly performing poorly.

63. Domestic Producers have also been hit by dynamism of Indian Rupee which appreciated by over 8% in the POI. This may be adjusted when determining injury margins.

64. With the appreciation of INR, injury margin is required to be calculated in INR. Moreover, the appreciation or depreciation of Rupee, in fact, not only impact the import price of the product, but also cost of production and selling price all in the same direction. It would, therefore, be inappropriate to say that the domestic industry has suffered injury because of appreciation of INR.

Views of the Domestic Industry

65. The arguments are not fully unsubstantiated. The domestic industry in fact is not restricted to conventional CRT. The domestic industry is producing and supplying Flat CRT in a big way. It is also noted that the domestic industry was profitable earlier when the import prices were reasonable.

66. Only domestic operations are relevant for the present purpose. Domestic industry has segregated performance with regard to domestic and exports.

67. The Designated Authority has adopted verified information and has not found any contradiction.

68. The argument establishes and supports what the domestic industry has been arguing all long. When this is a situation globally, the concern of the domestic industry is with regard to problems compounded by dumping of the product. It is however reiterated that the stated problems exist only in other countries and not in Indian market. In India, the demand of the product has shown significant increase, as opposed to global market where demand has substantially reduced.

69. The argument is without substance under the law. Injury due to other dumped imports is not required to be segregated. The rules provide for segregating injury caused only by un-dumped imports.

70. It is not true that imports in 14, 15 and 20" category are because of inability of the domestic industry to meet the demand. Moreover, selling price of domestic industry for 14 and 15" is also below the non injurious price. As regards 21"-29", there is no substance in the arguments with regard to quality. The issue has been investigated by the Designated Authority in the previous case as well.

Examination by the Authority

71. The Authority has relied upon verified information and has not come across any incorrect or exaggerated claims.

Price effect of the dumped imports on the Domestic Industry

72. With regard to the effect of dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18, the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of like product in India or whether effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase, which otherwise would have occurred to a significant degree.

73. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject country have been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of the domestic industry have been compared with the landed cost of imports from the subject country.

Evaluation of price over period under consideration

74. The Authority examined the trend of import prices over the injury period, separately for each size and cumulatively for subject country. The relevant information is as shown below –

CIF import price	Rs Per Pc.				
	2005-06	2006-07	2007-08	POI	Decline in prices
14"		981	601	608	38%
15"					
20"		1,303	1,083	973	25%
21"	1,449	1,208	1,081	1,296	11%
21" flat	2,081	1,671	1,232	1,330	36%
21" slim			1,834	1,420	23%
29"	4,406		4,834		

75. CIF import price of the subject goods from the subject country have declined over the injury period. The price declines have ranged from 11% to 38%. In respect of high volume types (14" and 21" flat) the prices declined by up to 36 % respectively.

76. The Authority examined whether the above price decline could be linked to the decline in cost of production. The Authority notes that whereas the exporter has not provided relevant information in this respect, the domestic industry has provided information for the entire period. It is noted that even though there were declines in cost of production as well, the above declines are far more than the declines in cost of production.

Price undercutting

77. In order to determine price undercutting, Authority examined the responses filed by the exporter and importers/users. For the purpose, each type of CPT has been compared separately. Price undercutting for each type and thereafter weighted average for CPT as a whole has been determined which on a volume of ***pcs comes to Rs ***per pc. The Authority notes that the price undercutting is 7-12%.

78. In view of the above, the Authority concludes that selling price of the domestic industry have declined over the period, reasons for which is decline in the landed price of imports.

Price suppression and depression effects of the dumped imports:

79. In order to examine whether the imports were depressing or suppressing the prices of the domestic industry, the Authority has examined the trends in raw material costs and selling price. The relevant position is as follows –

	Indian rupees			
	2005-06	2006-07	2007-08	July 07 to June08
Raw materials costs				
➤ 14"	***	***	***	***
➤ Indexed	100	97	95	96
➤ 15"		***	***	***
➤ Indexed		100	96	96
➤ 20"	***	***	***	***
➤ Indexed	100	99	100	100
➤ 21" conventional	***	***	***	***
➤ Indexed	100	96	113	112
➤ 21" Flat	***	***	***	***
➤ Indexed	100	88	84	84
➤ 29"		***	***	***
➤ Indexed		100	107	111
Selling price				
➤ 14"	***	***	***	***
➤ Indexed	100	87	76	77
➤ 15"		***	***	***
➤ Indexed		100	85	85
➤ 20"	***	***	***	***
➤ Indexed	100	90	84	85
➤ 21" conventional	***	***	***	***
➤ Indexed	100	89	82	85
➤ 21" Flat	***	***	***	***
➤ Indexed	100	79	72	74
➤ 29"		***	***	***

Landed price of imports				
➤ 14"				***
➤ 15"				***
➤ 20"				***
➤ 21" conventional				***
➤ 21" Flat				***
➤ 29"				

80. The selling prices of the domestic industry have declined in the same direction and to the same extent as that of landed price of imports. The price decline has been significant forcing the domestic industry in selling the product significantly below the cost of production during the investigation period.

81. Considering the above, the Authority concludes that there has been a significant increase in the dumped imports, both in absolute terms and relative to production and consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Authority notes that there has been significant decline in the landed price of imports. As a direct consequence, the selling price of the domestic industry declined significantly over the injury period. Even though there was decline in raw materials costs, the decline in the selling prices were far more than decline in the raw materials costs. The imports from subject country thus forced the domestic industry to reduce the prices. Such price decline was significant and material.

Examination of other Injury Parameters

82. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analyzed hereunder.

Profits

	2005-06	2006-07	2007-08	July 07 to June08
Average cost of production (Rs/Pc)	***	***	***	***
Indexed	100	107	101	101
Average selling price (Rs/Pc)	***	***	***	***
Indexed	100	88	74	74
Profit & Loss per pc (Rs/Pc)	***	(***)	(***)	(***)
Indexed	100	-32	-101	-108
Total profit/ loss from domestic sales (Rs Lacs)	***	(***)	(***)	(***)

Index	100	(48)	(159)	(174)
-------	-----	------	-------	-------

83. It is seen that profitability of the domestic industry has severely declined over the years. Not that the domestic industry was having good profitability earlier (imports have been competing with the domestic industry for past several years). However, situation has significantly deteriorated over the injury period, when the domestic industry's profitability steeply declined due to dumped import from the subject country. Resultantly, the domestic industry faced significant financial losses.

84. The Authority ascertained profit before interest & depreciation for the petitioner. The position is as follows.

Rs. In lacs				
Particulars	2005-06	2006-07	2007-08	July 07 to June08
Profit before tax	***	(***)	(***)	(***)
Indexed	100	-48	-159	-174
Interest	***	***	***	***
Indexed	100	153	127	128
Depreciation	***	***	***	***
Indexed	100	151	170	181
Total of interest & depreciation	***	***	***	***
Increase in interest & depreciation (as compared to 2004-05) Indexed	100.00	151.93	148.71	154.03
Profit before interest & depreciation	***	***	(***)	(***)
Index	100.00	36.08	(29.67)	(36.40)
Decline in profit before interest & depreciation (as compared to 2005-06)	-	(***)	(***)	(***)
Index	-	(100)	(203)	(213)

85. It is seen from the above that even if interest & depreciation costs of the company would have been same as in the base year, its profits would have significantly declined. It is also seen from the above that profit before interest & depreciation showed a marked decline over the injury period.

Return on investment and cash flow

	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Return on capital employed (%)	***	***	(***)	(***)
Indexed	100.00	3.89	(58.46)	(67.83)
Cash profit (Rs. Lacs)	***	***	(***)	(***)
Indexed	100.00	4.97	(71.50)	(80.08)

86. It is seen that return on capital employed and cash flow deteriorated throughout the injury period. Return on capital employed was positive up to 2006-07. The same

however became negative from 2007-08 and the position deteriorated further in the investigation period.

87. With regard to cash flow, the Authority notes that the cash flow of the domestic industry declined steeply. From a situation of positive cash flow, the domestic industry was faced with a negative cash flow in the investigation period. The Authority also examined the position of cash profits with regard to production and sale of CPT. It was seen that the cash profits also show the same situation. Cash profits were positive in the earlier years and became negative in the investigation period.

Inventories

Volume in '000 pcs

Inventories	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Opening Inventories	***	***	***	***
Indexed	166	271	108	168
Closing Inventories	***	***	***	***
Indexed	271	108	144	87
Average Inventories	***	***	***	***
Indexed	218	190	126	127

88. The Authority notes that the subject goods are normally produced against confirmed orders. Therefore, the inventories with the domestic industry would normally be in respect of the confirmed orders.

Productivity

Fig. in '000

	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Productivity per employee (no. of pieces per employee)	***	***	***	***
Indexed	100	103	120	108
Productivity per day	***	***	***	***
Indexed	100	123	121	118

89. It is seen that productivity of the domestic industry decreased after improving up to year 2007-08.

Employment & wages

	2005-06	2006-07	2007-08	POI
Number of employee (nos.)	***	***	***	***
Indexed	100	119	101	101
Wages (Rs. in Lacs)	***	***	***	***
Indexed	100	159	226	216
Wages per employee (Rs. in Lacs)	***	***	***	***
Indexed	100	134	224	214

90. It is seen that employment level has decreased. This has been due to reduction in the level of contractual labour. The average wage increase per employee has almost doubled in comparison to the base year.

Growth

91. Considering various economic parameters of the domestic industry, even though there was positive growth in demand, sales, capacity, and production of the domestic industry, the growth with regard to capacity utilisation, contribution margin, profitability, cash flow and return on investment was negative.

Conclusion on injury:

92. The examination of above injury parameters indicates that growth in demand was 63% over the injury period. Given significant overall growth in demand, capacity, production and sales of the domestic industry increased. However, the increase in sales was far lower than the increase in the demand. Resultantly, the capacity utilization suffered. Imports of subject goods from subject country increased significantly from ***lac pcs. in 2005-06 to ***lac pcs during POI. The share of the imports from subject country in relation to demand increased from 0.08% in 2005-06 to 3.99% during POI whereas market share of Indian industry declined. There was consistent decline in the prices of various sizes of CPT being sold in the market. These price declines are not fully addressed by the decline in the costs. As a result of exporter reducing their prices consistently over the injury period, the domestic industry was forced to reduce its prices consistently throughout the period. Resultantly, the prices of the domestic industry declined to a significant extent as explained above. As a result of significant price depression, profit, returns on investments and cash flow situation of the domestic industry significantly deteriorated. The domestic industry suffered huge financial losses, negative return on investment, negative cash flow and negative cash profits. The Authority therefore concludes that the performance of the domestic industry deteriorated significantly in terms of profit, return on investments and cash flow. The declines were significant and material. Thus various parameters collectively and cumulatively show that the domestic industry has suffered material injury.

Causal Link

Views of LPD Indonesia, Onida and Mirc Electronics

93. We have a reservation in the findings of the DA as regards the causal link of injury to alleged dumping. The Domestic Industry is facing a lot of internal problems and international obsolescence and in-competitiveness. It suffers higher cost of production. It is engaged mostly in conventional CRT. However, consumers in most of the advanced countries, including a considerable share of Indian consumers have shifted to LCD, Plasma TV etc. Inefficiency of the domestic industry to adapt new technology is taking away their market internationally as well as in the domestic market. The causal link of injury established to the alleged dumping in the preliminary findings needs to be revisited.

94. Another fact that should have been considered here is the poor performance of the domestic industry in the international market. In 2005-06, the DI had an export sales 1670000 pieces of CPTs. This has come down to 419000 pieces during the POI. The DI's

export sales have come down to 25% during the POI in comparison with 2005-06. During the same period, their domestic sales have gone up by 62% in commensurate with increase in demand. So the DA should have applied his mind to analyse the reason why the DI has lost its international market. The reason lies in its in-competitiveness to meet the challenge. The reason for injury, if any, to the domestic industry is to be attributed to its intrinsic problems and not attributable to the alleged dumping. Had the domestic industry been able to maintain a similar growth in its export market, they could have achieved capacity utilization at 93% of its increased capacity (capacity increased from 5600000 pieces to 9400000 pieces). So the reason for low production, low capacity utilization and total sales volume is its inability to grow or even to maintain its export market at 2005-06 level. This fact has not been addressed in the preliminary findings.

95. The data submitted in the petition and the data considered in the provisional finding are erroneous and contradictory and are at variance with similar data as per their annual accounts. It appears that the whole exercise was to give a hurried provisional duty to please the domestic industry without ascertaining the accuracy of even basic data.

96. Moreover, from the records of the prior investigation it is evident that the EU after finding dumping and injury determined that there was no causal link. By contrast Thailand imposed AD Duty on Malaysia but failed to protect the Thai CRT Industry which died in any case. Most CRT producers have shut down during the injury period across the globe while survivors have made losses and have reduced capacities. The declining LCD prices (as per records of prior investigations a 2:1 price difference has to be maintained between LCD and CRT TVs otherwise CRT TV industry cannot survive) led globally to reduced CRT Prices during the injury period. This global phenomenon was thus not limited to India and the cause could not be unique to India and the EU no causal link determination is thus the correct determination. The EU findings were filed in the prior investigations and may be referred to and relied on. LPD-I and other LDD companies have themselves been the victims of this global price suppression and depression.

97. Adjustment must also be made since these are separate investigations with separate POI for injury attributable to Indonesia and injury attributable to dumping by other countries in the prior investigations. They cannot be clubbed together. For this reason too there can be no retrospective duty. Hence the injury attributable to other countries as per the final findings in those investigations must be different from the injury attributable to Indonesia.

98. Samtel would be the preferred supplier due its location as it is in 14" and 15" where imports take place only due to its inability to meet domestic demand if it could rectify its quality problems in respect of 21"-29" especially flat and slim versions. However, it consistently fares poorly in its CRT supplies in these categories and below the minimum acceptable threshold. In the prior investigations records there is evidence of consistently poor quality recorded at crt tv assembly line on domestic CRT 21" and above.

99. Domestic Producers have also been hit by dynamism of Indian Rupee which appreciated by over 8% in the POI. This may be adjusted when determining injury margins.

Examination by the Authority

100. The allegation that data submitted in the petition and the data considered in the provisional finding are erroneous and contradictory and are at variance with similar data as per their annual accounts is misplaced and without basis. No evidence to this effect has been provided and to that extent the allegation cannot be taken cognisance of. Further a mere mention of inefficiency of the domestic industry, as alleged cannot be taken on its face value without being provided evidence to this effect. The data submitted by the DI showed no such situation. The Authority notes that there is no clubbing of injury analysis in respect of the imports from subject country and imports from other countries already subject to ADD. To understand the injury being incurred by Indonesia, the authority has carried out the price undercutting analysis of imports, for the present POI, in respect of countries already subject to anti dumping duties namely China, Malaysia, Korea and Thailand. The weighted average price undercutting from these countries namely China, Malaysia is in the range of 10-15%, Korea in the range of 0-5% and negative price undercutting from Thailand. The price undercutting suffered in respect of imports from Indonesia itself is in the range of 7-12%, hence the authority concludes that the imports from Indonesia have caused injury to the domestic industry in addition to that caused by other countries already subject to anti dumping duty. In order to reach its conclusions on the cause of the injury suffered by domestic industry and in accordance with Article 3.5 of Agreement on Anti-Dumping and as per Para (v) of Annexure-II under Rule 11 under Customs Tariff Act as amended, the Authority examined the impact of all known factors and their consequences on the situation of the domestic industry. Known factors other than dumped imports, which could at the same time have injured the domestic industry were also examined to ensure that the possible injury caused by these other factors was not attributed to the dumped imports.

Examination of Other Known Factors

Volume and prices of imports from other sources

101. The Authority notes that out of total imports, the volumes of imports from other countries are 39.48% during POI. The Authority notes that the imports from other countries are already subject to anti dumping duty in a parallel investigation covering China, Korea, Malaysia and Thailand.

Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

102. The Authority notes that there is no contraction in the demand during POI. On the contrary, overall demand for subject goods has shown significant positive growth during the injury period. The demand of subject goods has shown growth of 63% over the injury period. There is no significant change in consumption pattern of the product in the domestic market, which could be attributed to the injury to the domestic industry.

Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

103. The Authority notes that there is a single market for the subject goods where dumped imports from subject country compete directly with the subject goods produced by domestic industry. Imports of various types of CPT are being sold in the same market as CPT being sold by the domestic industry.

104. The Authority notes that no evidence of restricted practice prevalent in the industry, which could be attributed to the injury to the domestic industry, has been brought to the notice of the Authority.

Development in technology

105. On the basis of examination of the records, the Authority proposes to hold that development in technology has not been a relevant factor for the injury to the domestic industry.

Export performance

106. The Authority notes that the export volumes of the domestic industry have declined over the injury period. However, performance with respect to various economic indicators has been determined with respect to domestic sales only. Hence, the Authority proposes to hold that material injury suffered by the domestic industry is not a result of the decline in export performance of the domestic industry.

Productivity of the Domestic Industry

107. Productivity of the domestic industry in terms of production per employee has significantly increased.

Conclusion on Causation

108. In view of the above, the Authority holds that injury suffered by the domestic industry due to other factors is far too insignificant as compared to injury suffered because of price decline resulting from dumped imports. The situation of the domestic industry has shown a material deterioration over the injury period, which was substantially due to dumped imports. The Authority concludes that the domestic industry has suffered material injury due to dumped imports.

Currency**Views of LPD Indonesia, Onida and Mirc Electronics**

109. The Rupee has depreciated by over 15% now compared to the POI hence providing for provisional duty on the basis of US Dollars amounts to giving an additional unlawful 15% duty to the Petitioners.

110. Moreover the ADD is recommended in US Dollars whereas in the other CRT AD investigations reference prices are in INR. It is curious that same product should be subject to different reference price currencies in partly contemporaneous investigations. It would be expected that the Hon'ble Authority should at least be consistent in its practices, whether correct or incorrect, at least in respect of the same Subject Goods and almost contemporaneous investigations. The impact has been to place Indonesia at a disadvantage to the Subject Countries in the other Investigations though the Export Price was higher. It is not the purpose of AD Investigations to cast an unfair disadvantage to a cooperating exporter with a comparatively better export price.

Examination by the Authority

111. The Authority notes that contrary approach of the interested parties is established by their argument on appreciation of INR during period of investigation and depreciation of INR thereafter. The established practice, however, is to consider prevailing exchange rate and thereafter express the duties in US\$ or INR as is appropriate in the facts & circumstances of the case. The appreciation of US\$ also impacts the cost of production and selling price of the domestic industry as well. Therefore the Authority recommends to continue the duty leviable, denominated in US \$ as was done at the PF stage.

Magnitude of Injury Margin

112. The non-injurious price determined by the Authority has been compared with the landed value of the exports for determination of injury margin. The weighted average landed price of the exports from the subject country and the injury margins have been worked out as follows.

Injury margin calculations

PT LP Displays Indonesia							
Company Code	Unit	***	***	***	***	***	***
Size		14 CV	20 CV	21 SUS	21 RF	21 RF	21 US
Injury Margin %		5-10	15-20	10-15	15-20	12-17	7-12

Comments to Disclosure Statement

Submissions of Domestic Industry

113. The Domestic Industry has sought review of dumping margins on the premise that:

- i. The exporter has not appropriately disclosed the cost of production. They have claimed to have relied on published financial results of the producer, who they claim, have suffered financial losses in inputs consumed for PUC and profits in respect of PUC.
- ii. In the context of multinational companies, some of the business expenses are not even incurred by the company and to that extent the investigations are product specific and not company specific and therefore cost of production of "Product" and not cost of production of Company should be considered.
- iii. The company procuring RM from a related company cannot be treated as an arms' length transaction.

- iv. The Authority appears to have determined cost on account of interest expenses, selling, general and administrative expenses on the basis of expenses incurred by the company investigated without taking into account expenses incurred by the holding company.
- v. Information with regard to cost of production and total production of each size does not appear to be on record and information in appendices 7, 8 and 8A and 3B cannot be reconciled.
- vi. It appears that transfer price of captive inputs, is materially below cost of production and market value of such captive consumption.
- vii. They have also contested cost allocation on account of labour cost, Admn. Expenses, interest cost and other expenses.
- viii. Net export price does not appear to have been determined correctly as export price has to be constructed in respect of related party transactions. They have further alleged that adjustments on credit cost have not been considered.

Examination by the Authority

114. The Authority has gone into the above submissions and concludes that these are only apprehensions and not supported by any corroborative evidence. The Authority, on the other hand has considered only the verified data and therefore margins have been correctly worked out.

Submissions of PT LP Displays Indonesia.

115. The exporters have sought to check the working sheet for OCT performed by the Authority and requested that they be provided the detailed working sheet for OCT so that they can effectively comment on the same prior to the Final Findings. They have further requested to again check the normal value of 21" in the appendix 3A of the response to the questionnaire because Authority used total sales in domestic market for normal value. Specially, there are big differences in the normal value of A51ERS420X and A51QDJ420X. They have also claimed that a minor calculation mistake by the Authority while calculating the dumping margin of A48QAD220X which they claim should be changed to 5.43 US\$. They have also sought disclosure of NIP especially the effective profit margin provided for so that they may effectively comment on the same for meaningful application of the lesser duty norm practiced by the Authority. They have further submitted that the damage in Indian CRT industry was caused by low productivity and high production cost including labour cost and financial expense, not by LPD Indonesia.

Examination by the Authority

116. In response to the disclosure statement, the exporters requested to examine the detailed calculation sheets for adjusted cost of production especially the components of the rates of DY, financial expenses adjusted for each size, the details of GCT test carried out and the profit ratio adopted by the authority in respect of the profitable sales for working out the Normal value and the resultant dumping margin. The examination was carried out by the representative of the exporters and required details were provided. No further comments were provided by the exporters in this regard. As far as NIP is concerned, the same is a confidential information related to the Domestic Industry and cannot be disclosed.

Conclusion On Causation

117. On the basis of the above examination, the Authority concludes that the subject goods exported from the subject country are at prices below their normal value and have caused injury to the domestic industry indicating causal links between dumping of subject goods and injury to the domestic industry. Significant increase in the volume of dumped imports has resulted in decline in the market share of domestic industry. It is further seen that decline in market share of domestic industry as a consequence of increase in market share of subject imports from the subject country prevented the domestic industry from increasing their sales commensurate to growth in demand. As a result, sales of domestic industry during POI did not increase to such an extent that domestic industry could have optimally utilized its capacity. Consequently, production, sales and capacity utilization of the domestic industry suffered as a result of the decline in the market share of the domestic industry. Significant price undercutting caused by dumped imports prevented the domestic industry from increasing its prices. Resultantly, profit, cash flow and return on investment of the domestic industry deteriorated in the POI. Significant price-undercutting and substantial increase in the volume of dumped imports adversely affected the performance of the domestic industry in terms of profits, cash flow, and return on investment, these parameters further deteriorated in POI.

118. The Authority, therefore, concludes that the dumped imports originating in the subject country have caused material injury to the domestic industry within the meaning of Rule 11 of Anti-dumping Rules and article 3.5 of Agreement of Anti-dumping.

FINAL FINDINGS:

119. Having regard to the issues raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority through the submission of interested parties including those made as comments to the disclosure statement or otherwise as recorded in the above findings and on the basis of the above analysis of the state of current dumping and injury, the Authority concludes that:

- i. Imports originating in the subject country are taking place at dumped prices and the same have caused material injury to the domestic industry
- ii. Subject goods exported from the subject country are at prices below their normal values, Non Injurious Price of the domestic industry and the net sales realization of the subject goods of the applicants, and have caused injury to the domestic industry
- iii. Decline in market share of domestic industry as a consequence of increase in market share of subject imports from the subject country prevented the domestic industry from increasing their sales commensurate to growth in demand
- iv. Significant price-undercutting and substantial increase in the volume of dumped imports adversely affected the performance of the domestic industry in terms of profits, cash flow, and return on investment.

- v. Significant increase in volume of dumped imports from the subject country (both in absolute terms as well as in relation to the share in demand) has resulted in significant decline in market share of the domestic industry.

120. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, the antidumping duty equal to the difference between the amount indicated in Col 9 of the table below and the landed value is recommended to be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from the subject countries:

Sl No	Sub-Heading	Description of Goods	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Specification in inches	Amount	Unit	Currency
1.	854011	Colour Television Picture Tubes	Indonesia	Indonesia	PT LP Displays Indonesia	PT LP Displays Indonesia	14"	21.76	Per Pc	US \$
2.	-do-	-do-	Indonesia	Indonesia	Any Other	Any Other	14"	21.76	Per Pc.	US\$
3.	-do-	-do-	Any other than Korea RP, China PR, Malaysia and Thailand	Indonesia	Any	Any	14"	21.76	Per Pc.	US\$
4.	-do-	-do-	Indonesia	Any other than Korea RP, China PR, Malaysia and Thailand	Any	Any	14"	21.76	Per Pc.	US\$
5.	-do-	-do-	Indonesia	Indonesia	PT LP Displays Indonesia	PT LP Displays Indonesia	20"	32.16	Per Pc.	US\$
6.	-do-	-do-	Indonesia	Indonesia	Any other	Any other	20"	32.16	Per Pc.	US\$
7.	-do-	-do-	Any other than Korea RP, China PR, Malaysia and Thailand	Indonesia	Any	Any	20"	32.16	Per Pc.	US\$
8.	-do-	-do-	Indonesia	Any other than Korea RP, China PR, Malaysia and Thailand	Any	Any	20"	32.16	Per Pc.	US\$
9.	-do-	-do-	Indonesia	Indonesia	PT LP Displays Indonesia	PT LP Displays Indonesia	21"	36.99	Per Pc.	US\$
10.	-do-	-do-	Indonesia	Indonesia	Any other	Any other	21"	42.93	Per Pc.	US\$
11.	-do-	-do-	Any other than Korea RP, China PR, Malaysia and Thailand	Indonesia	Any	Any	21"	42.93	Per Pc.	US\$
12.	-do-	-do-	Indonesia	Any other than Korea RP, China PR, Malaysia and Thailand	Any	Any	21"	42.93	Per Pc.	US\$
13.	-do-	-do-	Indonesia	Indonesia	Any	Any	15"	31.38	Per Pc.	US\$
14.	-do-	-do-	Any other than Korea RP, China PR, Malaysia and Thailand	Indonesia	Any	Any	15"	31.38	Per Pc.	US\$
15.	-do-	-do-	Indonesia	Any other than Korea RP,	Any	Any	15"	31.38	Per Pc.	US\$

				China PR, Malaysia and Thailand						
16	-do-	-do-	Indonesia	Indonesia	Any	Any	29"	92.06	Per Pc.	US\$
17	-do-	-do-	Any other than Korea RP, China PR, Malaysia and Thailand	Indonesia	Any	Any	29"	92.06	Per Pc.	US\$
18	-do-	-do-	Indonesia	Any other than Korea RP, China PR, Malaysia and Thailand	Any	Any	29"	92.06	Per Pc.	US\$

Notes

(a) Complete description of the product - Complete or incomplete thermionic, cold cathode or photo cathode valves and tubes such as vacuum or vapour or gas filled valves and tubes, mercury arc rectifying valves and tubes, also called cathode ray tubes, television camera tubes or cathode ray colour television picture tubes, or colour television picture tubes, or colour picture tubes etc. Video and computer monitor cathode ray tubes are beyond the scope of the present petition.

(b) For the purposes of this notification, "landed value" means the assessable value as determined under the Customs Act, 1962 (52 of 1962) and includes all duties of customs except duties levied under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.

121. Subject to above, the Authority confirms the provisional findings Notification No. 14/15/2008-DGAD dated 30th December, 2008 and corrigendum notification dated 2nd January, 2009, and recommends imposition of the anti-dumping duty as in Para 120 above and the duty table as above from the date of imposition of provisional anti-dumping duty.

122. An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

R. GOPALAN, Designated Authority